दूसरा अध्याय : एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम

दूसरा अध्याय : एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम

जिस समाज में प्रत्येक स्तर पर वैविध्यता हो, उस समाज को स्त्री-पुरुष जेंडरधारित चौखटों में बांधना मुश्किल है। यह बाँधने की व्यवस्था व्यक्ति को अपनी तरह होने और जीने को ख़ारिज करती है। लड़कों-लड़कों और लड़कियों-लड़कियों के बीच भी तो कई फ़र्क होते हैं। वह फ़र्क जेंडर के आधार पर भी देखे जा सकते है और यौनिकता के आधार पर भी। वस्तुतः व्यक्ति स्त्री है या पुरुष या वह जिसे वह खुद समझता है, यह यौनिकता ही नहीं, मनोवृति द्वारा भी निर्धारित है, जिसके उदाहरण समाज में मिल जाते है। पितृसत्तात्मक नज़रिया जेंडरीकरण द्वारा सिर्फ औरतों तथा मर्दों के संबंधों का ही निर्धारण नहीं करता बल्कि उसका असर मर्दों-मर्दों के बीच तथा औरतों-औरतों के बीच या अन्य किसी भी रिश्तों पर पड़ता है।

परिभाषा

हमें अक्सर यह सिखाया जाता है कि हमारी आनुवंशिकी विशेष रूप से हमारे गुणसूत्र हमें महिला(स्त्रियोचित) या पुरुष(पुरुषोचित) बनाते है। सामान्यतः एक व्यक्ति में 23 जोड़े गुणसूत्र होते हैं। आधे अंडे से और आधे शुक्राणु से आते है। सेक्स गुणसूत्र 23वीं जोड़ी हैं, जो जननांग के विकास को निर्देशित करता हैं। और इस तरह हमारे शरीर में जो सेक्स गुणसूत्र होते हैं उसके आधार पर सेक्स का निर्धारण होता है। यद्यपि प्रसव पूर्व विकास के अन्य पहलु जैसे हॉर्मोन भी हमारे जननांग विकास को प्रभावित करते हैं, बहुधा सेक्स गुणसूत्र इस विकास को निर्देशित करते हैं। 23वें जोड़े में एक 'x' गुणसूत्र अंडे से और 'x' या 'y' गुणसूत्र शुक्राणु से प्राप्त होता है। वास्तविक (तथाकथित) महिला के गुणसूत्र का प्रारुप 'xx' और वास्तविक (तथाकथित) पुरुष के गुणसूत्र का प्रारूप 'xy' होता है। हालाँकि अधिकांशतः व्यक्तियों में गुणसूत्र का प्रारूप 'xx'या 'xy' होता है। परन्तु कभी-कभी व्यक्ति विभिन्न सेक्स गुणसूत्र प्रारूप के साथ

भी जन्म लेता हैं। कभी अधिक, तो कभी कम गुणसूत्र वाले व्यक्ति भी जन्म लेते हैं। 70 से अधिक सेक्स गुणसूत्रों के प्रकार की खोज की गई है। और इनकी इन्हीं दलीलों से वैज्ञानिक अन्वेषणों का द्वार खुलता है। विषमलैंगिक यौनिकता के भांति ही समलैंगिक, बाईसेक्सुअल(द्विलिंगी) तथा इंटरसेक्स व्यक्ति भी होते हैं। परन्तु समाज सामान्ययीकरण के आधार पर यौनिकता की वैविध्यता को 'स्त्री-पुरुष' में बाँटता एवं परिभाषित करता हैं। किसी भी अस्मिता या पहचान को स्त्री या पुरुष रूप में केवल अपने सहूलियत के लिए बाँटा जाता है। कई पहचानें दोनों से भिन्न तो कई दोनों के घुले-मिले रूप भी होते हैं। वैज्ञानिक तथ्यों ने आज यौनोंमुखता की वैविध्यता को देखने की व्यापक दृष्टि प्रदान की है।

'LGBTQ' समूह का प्रयोग गैर-मानक जेंडर वर्णन हेतु किया जाता है। LGBTQ में 'L' से आशय लेस्बियन(Lesbian) से है। लेस्बियन उन स्त्रियों को कहा जाता है जिन्हें स्त्रियों की चाहत हो। वैसे तो बाईसेक्सुअल व्यक्ति भी स्त्रियों की चाहत रखते हैं किन्तु केवल स्त्रियों के लिए नहीं बल्कि पुरुषों के लिए भी रखते हैं।

लेस्बियन शब्द का उद्भव 'लेसबोस' नामक ग्रीक टापू से हुआ है। यह टापू 'सैफो' नाम की एक कवित्री से जुड़ा है जहां वह छठी शताब्दी (ईसा पूर्व) में रहती थीं [1]। सैफो प्राचीन ग्रीक साहित्य की लेखिका हैं। सैफो यूरोपीय साहित्य में स्त्रियों की प्रतिनिधि होने के साथ ही साथ एक लेस्बियन लेखिका भी हैं जिन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि स्त्रियों के बीच सम्बन्ध आकर्षण के भी हैं।

सैफो ने स्त्रियों द्वारा स्त्रियों को चाहने से संबंधित कविताएं लिखीं जिसके लिए वह काफी प्रसिद्ध थी। परन्तु लेस्बियन शब्द का प्रयोग 19 वीं शताब्दी से दिखायी देता है। मल्लिका सेनगुप्त लिखती है कि सामाजिक स्त्रीलिंग निर्माण के घेरे को तोड़ उनके खिलाफ जिहाद की घोषणा के तहत मर्दाना चरित्रवाली लड़की और समकाम के प्रति झुकाववाली लड़की का अस्तित्व देखने में आया। इस 'नयी नारी' जन्म की प्रक्रिया 1870 के बाद से ही झलक दिखलाने लगी थी [2]।

लेस्बियन संस्कृति का एक भाग बुच/फम्म (बुच अर्थात मर्दाना हाव-भाव तथा फम्म अर्थात स्त्रियोचित हाव-भाव) विशेषता को लेस्बियन संबंधों में स्वीकारता है। कहने का आशय यह है कि यह लेस्बियन संबंधों का एक प्रकार है। अतः प्रत्येक लेस्बियन सम्बन्ध बुच/फम्म युक्त नहीं होते है। एक्टिविस्ट माया शर्मा के अध्ययन के अनुसार उत्तर भारत में लेस्बियन स्त्रियां अपनी करीबी अथवा पार्टनर स्त्रियों के लिए दोस्त, सखी, साथिन, सहेली जैसे शब्दों का प्रयोग करती है तथा ट्रांस स्त्रियों के लिए 'रंगली' और ट्रांस पुरुषों के लिए 'बाबू' जैसे शब्द का प्रयोग किया जाता है। "बुच/फम्म कल्चर को ताइवान में 'टी' यानी टॉमबॉय और 'पी' यानी पाओ (ताइवानी भाषा में ये शब्द पत्नी के लिए प्रयोग किया जाता है) शब्द का प्रयोग किया जाता है। ताइवान के LGBT+ सर्कल में सामान्यतः यह पूछा जाता है आप 'टी' है या 'पी'। ताइवान के कैपिटल तायपेई में एशिया का सबसे बड़ा प्राइड आयोजित किया जाता है। 'conde Nast traveller' पत्रिका के अनुसार तायपेई एशिया का एक ऐसा शहर है जो LGBT+जन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है"[3] 18वीं शताब्दी में उर्दू कविता 'रेख्ती' में लेस्बियन को 'चपटबाज़' नाम दिया गया था। यह शब्द उनके बीच की नजदीकियों को बयां करता था।

गीताश्री लिखती है कि "लेस्बियनिज्म एक तरह के अधूरेपन को पूरा करने की कवायद जरुर मानी जा सकती है, जहाँ औरत अपनी सत्ता को स्थापित देखती है, जहां वह जीती नहीं जाती और जहां केवल सहकार के स्तर पर देह देह से मिलती है" [4] वह यह भी लिखती है कि 'यही पूरा सच नहीं है'। यह सच है कि समलैंगिक रिश्तें में स्त्री या पुरुष जीते नहीं जाते। पर यह सच जरुर नहीं है कि यह अधूरेपन को पूरा करने की कवायद भर है और न ही 'केवल' सहकार के स्तर पर देह से देह मिलती है। बल्कि प्रवृति भी शामिल होती है।

किसी भी व्यक्ति के तौर-तरीके या पहनावें को देखकर उसके यौन-अभिविन्यास को रेखांकित नहीं किया जा सकता। यौन-अभिविन्यास तथा पसंद दोनों दो बाते हैं। जैसे छोटे बाल रखने वाली हर लड़की

लेस्बियन नहीं होती। छोटा बाल रखना उसकी पसंद हो सकती है। ठीक उसी तरह लंबे बाल रखने वाली हर लड़की विषमलैंगिक नहीं होती है। निम्नलिखित उदाहरण को देखें -

"At the age of 13, when menstruation began, she noticed in dancing with her favourite girl-friends that when her breasts came in contact with theirs she experienced a very agreeable sensation with erection of nipples; but it was not till the age of 16 that she observed that the sexual region took part in this excitement and became moist. From this period she had erotic dreams about young girls. She never experienced any attraction for young men"[5]

'गे' शरीर से पुरुष होना तथा मन से स्त्री होना नहीं होता बल्कि 'गे' शरीर और काया दोनों से स्वयं को पुरुष मानते है और उनका आकर्षण पुरुष की ओर होता है। यह संभव है कि 'गे' स्वयं को पुरुष मानता हो, शारीरिक तौर पर भी पुरुष हो पर वह व्यवहार में स्त्रियोचित हो जिसे बॉटम (Bottom) 'गे' कह सकते है। शारीरिक संबंधों के दौरान उसकी भूमिका "स्त्री की भूमिका' के रूप में होता है। जरुरी नहीं की यह भूमिका स्थायी हो बल्कि इसके बदलने की भी संभावना हो सकती है।

'गे' का एक दूसरा प्रकार 'टॉप'(Top) 'गे' है जो शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में स्वयं को पुरुष मानता है तथा उसके आकर्षण का केंद्र पुरुष ही होता है। शारीरिक संबंधों के दौरान यह 'पुरुष की भूमिका' में होता है। परन्तु 'बॉटम गे' की ही भांति यह हमेशा स्थायी हो यह अनिवार्य नहीं।

LGBTQ में 'T' (Transgender) की कोई एक परिभाषा नहीं हैं। ट्रांसजेन्डर शब्द का प्रयोग उन सभी लोगों के लिए किया जाता है जिनकी पहचान जन्म से प्राप्त जेन्डर पहचान से भिन्न हो। जिसमें वे तो शामिल है ही जिनका जन्म शरीर से स्त्री रूप में हुआ है लेकिन स्वयं को लड़की या स्त्री नहीं मानते अर्थात ट्रांसमैन मानते है तथा वे जो शारीरिक रूप से लड़के के रूप में पैदा हुए है लेकिन स्वयं को पुरुष नहीं मानते

बल्कि ट्रांसवुमन मानते है। अकसर समझा जाता है कि ट्रांसजेन्डर के अंतर्गत ट्रांसमैन तथा ट्रांसवुमन ही आते हैं। लेकिन इसके अंतर्गत कोथी, जोगप्पा तथा हिजड़ा भी आते हैं। वे लोग भी इसमें शामिल हैं जो स्वयं को लड़का या लड़की कुछ नहीं मानते। अतः ट्रांसजेन्डर कोई एक पहचान नहीं बल्कि इसमें अनेकों पहचान शामिल हैं। [6]

कोई व्यक्ति जो शरीर से पुरुष हो परन्तु अपनी आत्मा को तथा स्वयं को स्त्री मानता हो, स्त्री के रूप में ही अपनी पहचान स्वीकारता हो, हिजड़ा (सामान्य भाषा में) होते हैं। हिजड़ा एक संस्कृति है। एक घराना है। जिनकी उपस्थिति प्राचीनकाल से ही इतिहास और पौराणिक गाथाओं में मौजूद है। इनकी मौजूदगी तब से है जब से मनुष्य जाति है। हिजड़ा स्वयं को ट्रांसजेंडर तो मानते है परन्तु दोनों दो तरह की अवधारणाएं हैं। जिन्हें एक साथ घुला-मिलाकर नहीं समझा जा सकता है। 'ट्रांसजेंडर' शब्द का उद्भव 2014 में संवैधानिक रूप से थर्डजेंडर के रूप में मान्यता मिलने के बाद होता है। इसके बाद सार्वजनिक क्षेत्र में इस विषय पर व्यापकता से विचार-विमर्श होना शुरू हुआ। सरकार ने इन्हें बेशक थर्ड जेंडर के रूप में मान्यता दी पर सभी पहचानों को एक ही गठरी में बाँध कर गड्डमड्ड कर दिया। वह चाहे जेंडर से जुड़ा हो या यौनिकता से ही क्यों न जुड़ा हो। ट्रांसजेंडर स्वयं को हिजड़ा नहीं मानता है। 'ट्रांसजेंडर' और 'हिजड़ा' यह दोनों अवधारणा बहुत हद तक एक-दूसरे से अलग है और कुछ हद तक एक है। कई ट्रांसजेंडर स्वयं को 'ट्रांस औरत' तथा कई स्वयं को पूर्णतः स्त्री के रूप में ही अपनी पहचान मानते है तथा अन्य लोग भी उन्हें 'स्त्री पहचान' के रूप में ही स्वीकार करे इसकी अपेक्षा रखते है। ट्रांसजेंडर एक वृहद शब्दावली है। एक नया और ऐसा शब्द जिसमें जेंडर के विभिन्न स्वरुप हैं। हिजड़ा समुदाय ट्रांसजेंडर के अंतर्गत आने वाला एक भाग मात्र है।

'हिजड़ा' समुदाय ट्रांसजेंडर के अंतर्गत आने वाली एक पहचान है। 'हिजड़ा' समुदाय स्वयं को 'किन्नर' रूप में संदर्भित करता है। इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि क्षेत्रों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इन्हें और भी नामों से जाना जाता है। जैसे-हिंदी, बंगला, नेपाली,तथा मराठी में हिजड़ा, संस्कृत

में क्लीबा, नपुंस, षण्ढ, उर्दू में ख्वाजासरा, गुजराती में पवैया, पंजाबी में खुसरा, सिंधी में खदरा, कश्मीर में नपुंसख्, उड़िया में हिंजडा, असामी में नपुंसक, तेलगु में नपुंसकुदु, खोज्जा या म्मादा, तमिल में अरावनी या थिरु नंगाई, मलयालम में संदन या हिजडा, कन्नड़ में छक्का या मंगलमुखी।

किन्नरों के हार्मोनल संरचना के संबंध में डॉ. प्रदीप प. पाटकर लिखते हैं- "टेस्टोस्टेरॉन के प्रभाव की न्यूनता के कारण लिंग पुरुषों का और लिंगभाव स्त्री का होने पर भ्रूण 'हिजड़े' के रूप में जन्म लेता है। वहाँ पुरुष को स्त्री की तरह रहना, बर्ताव करना पसंद आता है। हाव-भाव, बर्ताव, पहनावा, साथी का चुनाव, खुद का एहसास, यह सब स्त्री जैसा होता है। इनमें से किसी- किसी को पुरुषलिंग भी नहीं चाहिए होता, पर स्त्री जैसा शरीर, कम से कम छाती और लिंग होना चाहिए, ऐसा लगता है। फिर वे इलाज में स्त्री-संप्रेरकों की मांग करते हैं या लिंगबदल-शल्यक्रिया का अनुरोध करते हैं" [7]।

Q अर्थात 'क्वीयर' उन तमाम लोगों को भी शामिल करता है जो न तो विषमलैंगिक होते है और न ही स्वयं को एल, जी, बी, टी मानते हैं।

LGBTQ समूह के साथ '+' चिह्न का प्रयोग भी किया जाता है। '+' चिह्न के अंतर्गत वे तमाम पहचानें आती है और आ सकती है जो स्वयं को विषमलैंगिक नहीं मानते हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि व्यक्तिक स्तर पर रुचियाँ और स्वभाव अलग-अलग होता है। यदि विषमलैंगिक लोग होते हैं, तो समलैंगिक भी होते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे मानव अधिकार से जुड़े बहसों ने इन्हें कुछ समाजों में नागरिक मान्यता प्रदान की। लेबिया (क्वीयर नारीवादी एल बी टी संगठन) ने कुछ ऐसे व्यक्तियों का अध्ययन किया जिन्हें जन्म से 'स्त्री' जेंडर के रूप में निर्धारित किया गया है, परन्तु अध्ययन में शामिल सभी उत्तरदाता स्वयं को औरत या स्त्री जेंडर नहीं मानते। लेबिया ने उनके द्वारा व्यक्त अनेक जेंडर पहचानों के रूप में जी गई वास्तविकता को उजागर किया है। जिसमें जैविक वैविध्यता के साथ ही साथ शारीरिक वैविध्यता के भी प्रकार मिलते हैं।

एलजीबीटीक्यूजन : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

आज हम जिस एलजीबीटीक्यूजन तथा क्वियर विमर्श की चर्चा कर रहे है उसकी जड़े बहुत हद तक स्त्री विमर्श में प्रवृत रही है। आज वह एक मुकाम पर आकर सैद्धान्तिकी के रूप में विकसीत हुआ है। अतः एलजीबीटीक्यू विमर्श को समझने के लिए स्त्रीवाद की आन्दोलनात्मक विकासयात्रा को समझना होगा।

औद्योगिक क्रांति से समाज में व्यापक बदलाव आया। महिला अधिकारों की लड़ाई अमेरिका में जोर ओ शोर से चल रही थी। स्त्रियां एक तरफ घर से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रही थीं तो दूसरी ओर सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में हिस्सा भी ले रही थीं। 1820 में अनेक नारी संगठन बने। लन्दन में सन 1840 में दासप्रथा-विरोधी विश्व सम्मलेन से लुक्रेशिया मट एवं एलिजाबेथ कैंडी स्टानटन को स्त्री होने की वजह से बहिष्कृत किया गया। जिसके विरोध में सेनका फाल्स कन्वेंशन में 1848 में नारी आन्दोलन चलाने की शपथ ग्रहण की गयी। स्त्रियों ने संपत्ति के अधिकार, शिक्षा के अधिकार और मत के अधिकार की मांग की जिसने समाज में हलचल ला दी। 1865 में जॉन स्टुअर्ड मिल ने स्त्रियों के मताधिकार के सम्बन्ध में पार्लियामेंट में एक प्रस्ताव रखा।

उन्नीसवीं सदी का समय उपनिवेशीकरण के विरोध खिलाफत का समय है और समाज तथा साहित्य में नारी हस्तक्षेप का भी समय है। स्कॉटलैंड की विदुषी मरियोन रीड ने 1843 ई. में 'ए प्ली फॉर विमन' लिखी। 'ए प्ली फॉर विमन' में स्त्री मताधिकार की मांग थी। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक ब्रिटेन के कॉलेजों में महिलाओं को प्रवेश मिलना प्रारंभ हो चूका था, महिला कॉलेजों की भी स्थापना हो रही थी। स्त्रियां संगठित हुई और समाज सुधार कार्यों में भी हिस्सा लेने लगी। शिक्षित स्त्रियां उपेक्षित स्त्रियों के लिए आगे आयी। 'विवाहित स्त्रियों को संपत्ति का अधिकार अधिनियम' पारित हुआ। वैश्याओं के जीवन से जुड़े

अधिकारों की चर्चा हुई। नारी सशक्तीकरण का आधार और मूल-मंत्र समान अधिकार और समान अवसर का दावा बन गया था। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में शुरू हुआ स्त्री अधिकारों की मांग बीसवीं सदी के आते-आते व्यापकता से फैल जाती है। स्त्रीवाद का पहला चरण स्त्री के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधार से जुड़ा था। पितृसत्तात्मक मानसिकता की जेंडर वर्चस्ववादी प्रवृति की गहरी पड़ताल हुई। अतः प्रथम चरण स्त्रियों के लिए भौतिक आवश्यकता और अवसर के मांग के साथ सामने आता है। विशेषतः मतदान और संपत्ति के अधिकार से जुड़ा था।

सन 1860-70 के दौरान मार्क्सवाद का स्त्रीवाद पर अधिक प्रभाव पड़ा। जिसके फलस्वरूप मार्क्सवादी स्त्रीवाद उभरकर सामने आता है। मार्क्स की अवधारणा के अनुसार वर्ग आधारित सामाजिक संरचना के अंतर्गत व्यक्ति उत्पीड़ित रहता है। स्त्री को प्राप्त दोयम दर्जा सामाजिक निर्मिती है, न कि जैविक। मार्क्सवादी स्त्रीवादियों का मानना है कि वर्ग-शोषण का ही एक रूप है यौन-शोषण। "उन्नीसवीं सदी के अंतिम तथा बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में मार्क्सवाद के साथ नारीवाद के दार्शनिक सम्बन्ध एवं विच्छेद पर पक्ष-विपक्ष की चर्चाएँ छिड़ी और दोनों खेमों के लोगों ने अपने-अपने प्रस्ताव रखे। पक्षधर लोग, जैसे क्लारा जेटकिन और इलिनोर मार्क्स ने सर्वहारा क्रांति का आह्वान किया और उसमें पुरुष-भागीदारी को महत्वपूर्ण बताया। ऊनके अनुसार संयुक्त क्रांति में स्त्री-पुरुष का भेदभाव अलगाववादी सिद्ध होता है। इसलिए बेहतर लक्ष्यों की पूर्ति के प्रयास में स्त्री-पुरुष साझेदारी की जरुरत है। पर अलेक्सांद्रा कोलोंटाई जैसी मार्क्सवादी नारीवादियों ने मार्क्सवाद के साथ नारीवाद को मिलाने से बढ़कर, उन्हें अलग-अलग प्रसंगों में देखने-परखने का आह्वान किया। उन्नीस सौ सत्तर के दशक में रेडिकल नारीवाद ने भी अपने तरीके से मार्क्सवाद की आलोचना की। आधुनिक समाज, नियम, धर्म, राजनीति, कला-साहित्य आदि सब पुरुष-निर्मित हैं। अतः निर्माण व आचरण में वे पुरुष-स्वभावी हैं। रेडिकल नारीवादियों ने स्पष्ट किया कि पुरुषवादी

समाज, मात्र पूंजीवाद के परिणामस्वरूप वजूद में आयी व्यवस्था नहीं है। इसलिए पूंजीवादी प्रतिरोध से मिलकर नारीवादी प्रतिरोध का समाधान नहीं हो पाएगा"[8]

1900 से प्रथम विश्वयुद्ध तक यूरोप तथा अमेरिका स्त्री और पुरुषों के तौर-तरीके, काम-काज इत्यादि के बीच परस्पर विरोधी तस्वीर खींचने का काम कर रहे थे। जिसके मूल में विक्टोरियाई प्रवृत्ति निहित थी। प्रथम विश्व युद्ध ने सब कुछ बदल कर रख दिया। ऐसे में श्रम-विभाजन को और जेंडर भेद को पूरी तरह से जारी रखना संभव न हो सका। गे और लेस्बियन पहचानें भी उभरकर सामने आये। पितृसत्ता के नीति-नियम जो अब तक खड़े थे वह मानो लड़खड़ाने लगे। पितृसत्तात्मकता ने चाहा कि युद्ध से लौटे पुरुषों को उनका काम सौंपकर पुनः स्त्री घर-गृहस्थी की तरफ मुड़े। परन्तु युद्ध ने स्त्री को इस बात का अहसास दिलाया कि वे घर के साथ बाहर की जिम्मेदारी भी बखूबी निभा सकती हैं।

युद्ध के बाद पाश्चात्य देशों में स्त्रियों की दुनिया में एक तीव्र बदलाव आया। नारी संगठन जेंडर-भेदभाव मुक्त समाज के स्वप्न की लड़ाई के लिए निकल पड़े। परन्तु पुरुषों को स्त्रियों की बराबरी रास नहीं आ रही थी जिसके कारण उनके बीच तनाव बढ़ने लगे। यूरोप तथा अमेरिका में सिंगल मदरहुड, सिंगल फादरहुड, लिव इन रिलेशनसीप तथा समलैंगिक दाम्पत्य जीवन आंशिकतः प्रसिद्धि पाने लगे। फलस्वरूप इन्हें कानूनी मान्यता भी हासिल हुई। मल्लिका सेनगुप्त लिखती है "पचास के दशक में अमेरिकी कवि ऐलेन गिन्सबर्ग जब कोलकाता आये हुए थे, तभी संभवतया पहली बार कोलकाता के बुद्धिजीवियों में गे-परिवार के बारे में सचेतनता आयी थी" [9]।

व्यक्ति के व्यक्तिक आजादी को प्रबोधन काल (रेनेसाँ काल) में मानवीय मूल्य के रूप में स्थान प्राप्त हुआ। फलस्वरूप निर्मित संस्थाओं और उन संस्थाओं द्वारा निर्मित जेंडर व्यवस्था ,जेंडर के आधार पर भेदभाव की पड़ताल होनी शुरू हुई। जागरण के इस समय सबसे पहले सुधार की दृष्टि उस शोषण की ओर

मुड़ी जो आधी आबादी अर्थात स्त्री आबादी हैं। धीरे-धीरे स्त्री जागरण उस शोषण व्यवस्था की भी पड़ताल करने लगा जिसने जाती, धर्म, अल्पसंख्यक, जेंडर के आधार पर लोगों को गुमराह कर रहा था।

जेन्डर -वैषम्य के विरुद्ध उधर इंग्लैंड में भी लड़ाई जोरदार तरीके से प्रारंभ हो चुकी थी। सन् 1920 में स्त्रियों को मताधिकार तो मिला लेकिन केवल 26 राष्ट्रों की महिलाओं को। इधर भारतीय स्त्रियों को भी स्वाधीनता और अधिकार मिले जिसमे जवाहरलाल नेहरु एवं बाबासाहेब अंबेडकर की अहम् भूमिका हैं।

भारतीय नवजागरण परिप्रेक्ष्य में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को लेकर व्यापकता से चिंतन हुआ। इस चिंतन में स्त्रियों के साथ -साथ पुरुषों की भी भागीदारी रहीं। शिक्षा से लेकर राजनीतिक स्तर तक स्त्रियों की भागीदारी को लेकर विविध कदम उठाये गये और नारी विरोधी अंधविश्वासों पर प्रहार किया।

अमेरिका में 'संवैधानिक समता संसोधन' और 'समान अधिकार संशोधन' लागू हुआ। इसके अंतर्गत कामकाज और समान वेतन के नियम थे। अमेरिका के 'National Organisation of Women (नेशनल आर्गेनाइजेशन ऑफ़ विमन)' संगठन ने अलग-अलग समय पर नारी उत्पीड़क निरोधक नियम, प्रजनन और गर्भपात का अधिकार, नस्लवाद विरोधी नियम तथा समलैंगिक अधिकार जैसे नियमों को संलग्न करने की मांग की।

Mary Wollstonecraft (मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट) की पुस्तक 'A Vindication of the Rights of Woman' (स्त्री अधिकारों का औचित्य साधन) ने इंग्लैंड के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व में क्रांति पैदा कर दी। वे लिखती है - "लड़कियों में भय को पोषित, संभवतः सृजित करने के बजाय, यदि उसी रूप में समझा गया होता जैसा कि लड़कों में भीरुता को, तब स्त्री को हम जल्द ही अधिक महत्वपूर्ण रूप में देख सकते थे" [10]। मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट ने तीसरी दुनिया के समाजों के पितृसत्तात्मक वर्चस्ववादी मानसिकता का पर्दाफाश किया। कात्यायनी सत्यम 'स्त्री अधिकारों का औचित्य साधन' पुस्तक के संपादकीय प्रस्तावना में लिखती है कि " 'स्त्री के अधिकारों का औचित्य साधन' में उन्होंने इस विचार को खुली चुनौती दी कि

स्त्री के अस्तित्व का उद्देश्य सिर्फ पुरुष को संतुष्ट करना होता है और यह मांग की कि शिक्षा, काम और राजनीति में स्त्रियों को पूर्णतः समान अवसर दिये जाने चाहिए" [11]। मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट ने नारी की आजादी, सामाजिक मान्यता और शिक्षा पर खुलकर विचार प्रकट किया।

John Stuart Mill (जॉन स्टुअर्ट मिल) ने 1869 में प्रकाशित 'The subjection of Women' (जिसका 'स्त्रियों की पराधीनता' नाम से प्रगति सक्सेना ने अनुवाद किया) के माध्यम से यह प्रमाणित किया कि स्त्री-पुरुष की बौद्धिक क्षमता में कोई भिन्नता नहीं हैं। पितृसतात्मक राजनीति की पर्ते खोलते हैं और कहते हैं कि "यह भी पुरुषों का स्वार्थ ही है कि उन्होंने स्त्रियों के सामने विनम्रता, पूर्ण समर्पण और व्यक्तिगत इच्छा के हनन को यौन-आकर्षण के अभिन्न अंग के रूप में रखा ताकि मनोवैज्ञानिक रूप से स्त्रियाँ इतनी समर्पित हो जायें कि यौनिक स्वेच्छा और स्वतंत्रता के बारे में सोच भी न सकें और उन्हें अपनी पराधीनता में ही सुख अनुभव हो" [12]। जो भिन्नता दिखती है वह दरअसल दिखाई जाती है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने स्त्री और पुरुष को समान न्याय और वैयक्तिक स्वाधीनता देने की बात की। "स्त्री-पुरुष समानता के विरोध में जो उपादान काम करते हैं, उनमें मिल प्रचलित भावनाओं को प्रमुख स्थान देते हुए उनके विरुद्ध तर्क करते हैं। वे बताते हैं कि (उन्नीसवी शताब्दी में) समाज में आमतौर पर लोग स्वतंत्रता और न्याय की तर्कबुद्धिसंगत अवधारणाओं को आत्मसात कर चुके हैं लेकिन स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में उनकी यह धारणा है कि शासन करने, निर्णय लेने और आदेश देने की स्वाभाविक क्षमता पुरुष में ही है"[13]।

Virginia Woolf (वर्जिनिया वूल्फ) के 'A room of one's Own'(ए रूम ऑफ़ वन्स ओन)(1929) ने भी नारीवाद के प्रकरण को आगे बढ़ाने में अहम् भूमिका निभाई। स्त्री के लिए उसके अपने कमरे की आवश्यकता को महसूस करते हुए वे लिखती है कि "एक शांत कमरा या एक ध्वनिविरोधी कमरा होने की तो बात छोड़िए- स्त्री के लिए अपना एक कमरा होने का तब तक सवाल ही नहीं होता था जब तक उसके माता-पिता बेहद अमीर या अत्यंत कुलीन न हों; और यह स्थिति उन्नीसवी शताब्दी के प्रारंभ तक

थी" [14]। समाज में व्याप्त स्त्री-पुरुष भेदभाव को वो बखूबी समझ रही थी। पुरुष की अपेक्षा स्त्री से तमाम तरह की अपेक्षाएं की जाती रही हैं और इसके तहत उनकी भूमिकाओं को गढ़ा जाता रहा है। बकौल वर्जिनिया वूल्फ - " स्त्रियों से आम तौर पर बहुत शांत होने की अपेक्षा की जाती है : लेकिन स्त्रियाँ भी वैसा ही महसूस करती हैं, जैसा पुरुष महसूस करते हैं ; उन्हें अपनी शक्तियों के लिए अभ्यास की और अपने प्रयत्नों के लिए एक क्षेत्र की उतनी ही जरूरत होती है जितनी उनके भाइयों को होती है ; उन्हें अत्यंत कठोर प्रतिबंध से, अत्यंत पूर्ण ठहराव से उतनी ही पीड़ा होती है जितनी पुरुषों को होती होगी ; और उनके अपेक्षाकृत अधिक अधिकारसम्पन्न बंधुओं का यह कहना संकीर्ण मानसिकता है कि उन्हें अपने आपको पुडिंग बनाने और मोजे बुनने, पियानो बजाने और थैले काढ़ने तक सीमित रखना चाहिए"[15]।

Simone de Beauvoir (सिमोन द बोउआ) के 'The Second Sex'(1949) ने वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान किया जिसने स्त्री के प्रति चली आ रही सोच और तरीके पर सोचने हेतु एक नई एवं उदार दिशा प्रदान की। "विधायकों, पुरोहितों, दार्शनिकों, लेखकों और वैज्ञानिकों ने अब तक यह दिखाने की चेष्टा की कि औरत की अधीनस्थ स्थिति स्वर्ग में ही बनाई गई है और पृथ्वी पर उसको सुविधाएं मिलती हैं। जिस धर्म का अन्वेषण पुरुष ने किया, वह उसकी आधिपत्य की इच्छा का अनुचिंतन है" [16]। वस्तुतः स्त्री की इस अधीनस्थ स्थिति का कारण स्वर्ग बताकर अपना पल्ला झाड़ लिया गया। जिसके मूल में संपत्ति और पितृसत्ता थी। सीमोन लिखती भी है कि "व्यक्तिगत संपत्ति के लोभ से पुरुष में स्वामित्व की भावना विकसित हुई। वह जमीन का मालिक था, वह गुलामों का मालिक था और अब बना स्त्री का भी मालिक। यहीं से औरत की गुलामी की कहानी शुरु होती है। ....व्यक्तिगत संपत्ति के साथ पितृसत्तात्मक परिवारों का उदय हुआ।" [17] "अब, विशेषकर पितृ-अधिकार कायम हो जाने के बाद, वह धीरे-धीरे वंशगत उत्तराधिकार के नियम में बदल गयी। शुरू में इसे लोग छूट देते थे, बाद में इसका दावा किया जाने लगा और अंत में यह

जबरदस्ती कायम कर लिया गया" [18]। "इस प्रकार के परिवार में औरत की एक अधीनस्थ स्थिति ही संभव थी" [19]।

उदारवादी स्त्रीवाद व्यक्तिक चयन, रूचि, और आजादी के पैरोकार हैं। यह 'स्त्री ही' नहीं 'पुरुष भी' की बात करता है। यह जेंडर के आधार पर निर्मित व्यवहारों पर पुनर्दृष्टि डालता है। जेंडर के आधार पर कार्य विभाजन को नकारता है। इसके अंतर्गत यौन कर्मियों के साथ ही साथ हिजड़ो और यौनिक अल्पसंख्यकों को भी सरकारी और सामाजिक रूप से स्थान मिले की चाहत निहित हैं। यह जेंडर समानता का पक्षधर है।

सोवियत संघ की मंशा पितृसत्तात्मक व्यवस्था का नाश करना और 'परिवार' संस्था को नए रूप में स्थापित करना था। क्रांति के बाद परिवार के आधिपत्य से व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए संभावित हर कानून बनाया गया। विवाह, विवाह-विच्छेद और इच्छानुसार गर्भपात का कानून। सबसे अहम कोशिश पति या गृहस्वामी के आर्थिक नियंत्रण से पत्नी एवं संतानों की आजादी की। लेनिन ने अपने दो अध्यादेशों के माध्यम से 9 अक्तूबर 1918 को निर्भरशील लोगों पर पुरुषों के एकतरफा व्यवहार की आदत को पंगु बना दिया तथा स्त्रियों को आर्थिक, सामाजिक एवं यौन-आत्मनियंत्रण का पूरा अधिकार दिया। उन्होंने यह भी घोषणा की कि निवास-स्थान, नाम तथा उपनाम के चुनाव का अवसर जल्द ही प्राप्त होगा। प्रतिबंधित सम्बन्ध, व्यभिचार तथा होमो-लेस्बियन जिन्हें अपराध माना जा रहा था, अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया। बावजूद इसके तीस-चालीस के दशक में सोवियत समाज में अन्य पाश्चात्य राष्ट्रों की भांती पितृसत्ता का एक नया रूप पुरे जाम-खाम के साथ खड़ा रहा। जिसका एक महत्वपूर्म कारण राजनीतिक संघर्ष था जिसे पूंजीवाद के खिलाफ चलाया जा रहा था।

लगभग 1908-1980 के बीच जेंडर भेद (स्त्री-पुरुष) की समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। Kate Millett (केट मिलेट) की 'Sexual Politics' (1969), Germaine Greer (जेर्मन ग्रीर) की 'The Female Eunuch'(1970) तथा Shulamith Firestone(शुलामिथ फायरस्टोन)

की 'The Dialectic of Sex' (1970) की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। यौनता, जेंडर-अस्मिता, स्त्री-मन-अनुभव की ओर स्त्री दृष्टि गई। फ्रेंच स्त्रीवादी हेलेन सिक्सु ने पुरुषों की रणनीति को उजागर करते हुए स्त्री विमर्श को आगे बढ़ाया तो लूस इरिगरे ने देह-लेखन की दिशा में कलम चलाया और स्त्री को जेंडर नामक एक वस्तु मानने वाली साहित्यिक मान्यताओं की खिलाफत की। पाश्चात्य देशों में इसी दौरान मनोवैज्ञानिक स्त्रीवाद का भी उद्भव होता है। फ्रायड, युंग और लकां के स्त्रीवादी विचार सामने आते हैं। फ्रेंच स्त्रीवादियों ने यौन-विशेषता को विशिष्ट माना।

अमेरिका में 'The Second Sex'(सिमोन द बोउआ) के प्रचारित-प्रसारित होने के पश्चात् स्त्रीवाद की एक धारा 'रेडिकल' नाम से विकसित हुई। इस धारा की पड़ताल के अनुसार पितृसत्ता न केवल पुरुष के आधिपत्य को कायम रखती है बल्कि वर्चस्ववाद को भी बनाए रखती है। इसका केंद्र स्वायत्त स्त्री है। पुरुष के एकाधिकार संरचना का विरोध इसके मूल में है। जेंडर विश्लेषण को इन्होनें अपने चर्चा के केंद्र में रखा।

अमेरिका में Ti-Grace Atkinson (टी ग्रेस एटकिंसन), Shulamith Firestone (शुलामिथ फायरस्टोन), Judith Browne (जूडिथ ब्राउन), Carol Hanisch (करोल हानिश) आदि इसके प्रवर्तक हैं। रेडिकल स्त्रीवाद का प्रभाव 1960 के बाद मध्यवर्ग की स्त्रियों के साथ ही साथ निम्नवर्ग की स्त्रियों तथा अश्वेत मजदूरिनों पर भी पड़ा। 1970 के पश्चात् ब्रिटेन में इनके आपसी मतभेद से उग्रवादी एवं समाजवादी धाराएँ अलग-अलग भागों में बंट गई। Germaine Greer (जेर्मन ग्रीर) की 'The Female Eunuch' (1970) स्त्री की यौनिकता से जुडी राजनीतिक मुद्दों पर विचार प्रकट करती है। 1973 में Jill Johnston (जिल जॉनसन) की 'Lesbian Nation' में रेडिकल स्वरुप दृष्टिगोचर होता है। अमेरिका की मेरी डाली (1928-2010) स्वयं को 'रेडिकल लेस्बियन स्त्रीवादी' कहती थीं। Andrea Dworkin (आंद्रिया डवोर्किन) (1946-2005,स्त्री समलैंगिकों के अधिकारों के लिए सक्रीय) Gloria Steinem (ग्लोरिया

स्टेयिनम) ने जेंडर परिवर्तन का अधिकार और समलैंगिक विवाह को मान्यता दिलाने हेतु प्रयास किया। परंपरागत यौनिकता की धारणा का विद्रोह इनका मूल स्वर है। ये अपनी देह पर अपने अधिकार की समर्थक थीं। इनकी दलील थी कि चूँकि प्रजनन का कार्य नारी का है, इसलिए संसार में नारी सत्ता होनी चाहिए। इनका मानना था कि समलैंगिक विवाह के भीतर किसी तरह के अधिकार की राजनीति नहीं होती। ये स्त्री-पुरुष के बीच जैविक भिन्नता को मानती है परन्तु शोषण एवं आधिपत्य का घोर विरोध करती हैं। दरअसल इनका उद्देश्य पुरुष निंदा नहीं था और न ही ये कामोद्दीपक अश्लील यौनिकता की समर्थक थीं बल्कि इन्होनें अश्लील यौनिकता को भी स्त्री शोषण के रूप में देखा।

इनका प्रस्ताव था कि गर्भ धारण एवं यौनिकता चयन के आधार पर निर्धारित हो। बेशक यौनिकता को लेकर स्त्रीवादियों के मत अलग-अलग रहे हैं। परन्तु इसमें कोई दोराय नहीं कि इन विषयों पर व्यापकता से विचार-विमर्श होने लगा। उग्रवादी स्त्रीवाद स्त्री के देह पर स्त्री के अधिकार की पक्षधर है। यह परम्परावादी मानवीय व्यवस्था एवं रिश्तों में राजनीतिक बदलाव चाहता है। समाज संरचना और जेंडर व्यवस्था को गलत मानने के कारण इन्हें पुरुष विरोधी बताया गया। इसकी एक धारा "स्त्री-समलैंगिकता" नाम से विकसित हुई। इनका मानना है कि पुरुष की ही भांति स्त्री भी एक यौनजीवी हैं, अतः उसे भी समान अवसर मिलना चाहिए।

दूसरे चरण के विकास के दौरान इस पर उठे विवाद ने जिस विचारधारा को जन्म दिया उसके समर्थकों का कहना है कि मनुष्य की समस्या को एक तरफा (स्त्री केन्द्रित या पुरुष विरोधी) सोचने की वजाय मानुषिक रूप में सोचने की आवश्यकता है। Amelia Jones (अमेलिया जोन्स) ने 1980-90 में स्त्रीवाद के अंतर्गत यौनभेद के शामिल किये जाने का विरोध जताते हुए नर एवं नारी को 'इंसान' समझने का प्रस्ताव रखा।

1980 में सिद्धान्तविद् Adrienne Rich (एड्रियन रिच) ने 'कम्पलसरी एक्जिसटेंस' की बात की। जिसके अनुसार विपरीत लिंग अर्थात पुरुषों द्वारा महिलाओं पर एक बाध्यतामूलक यौनता लादी गयी। किन्तु स्त्री इस बाध्यतामूलक मान्यता को मानने के लिए बाध्य कत्तई नहीं है। उन्होंने कहा कि समलैंगिक स्त्रियों को अस्वाभाविक या अस्वस्थ कहकर उसका प्रचार करना इसी पितृसत्तात्मक व्यवस्था के इतिहास की लैंगिक राजनीति है। प्रभा खेतान लिखती है कि "किसी भी प्रकार की समलिंगी यौन व्यवस्था का निषेध एक प्रकार का यौन दमन माना जाएगा जो स्त्री के उत्पीड़न को ही बढ़ावा देता है। ....यह सवाल जरूर उठता है कि समलैंगिकता का इतना भारी दमन क्यों किया गया ? प्रत्येक संस्कृति में समलैंगिकता पाई जाती है, अतः स्त्रियों के आपसी यौन समबंध को क्यों नकारा गया ? समलैंगिकतावाद नारीवादी आंदोलन का ही हिस्सा है। यह अलग बात है कि बहुधा यह गे आंदोलनों के साथ भी सक्रिय दिखलाई पड़ता है। किन्तु गेनेस और समलैंगिकता महज यौन चुनाव नहीं है। भौतिक रूप से समलिंगी स्त्री और गे पुरुष की पहचान इतरलिंगी स्त्री-पुरुष की पहचान से अलग है। वे अलग पहचान की मांग भी करते हैं। मगर कोई भी पहचान लैंगिक आधार पर निर्धारित नहीं होती"[20]।

स्त्रीवाद वर्ण, भाषा, धर्म, जाति आदि वर्चस्ववादी प्रवृत्ति का घोर विरोध करता है। जेंडर और उसके बाइनरी विभाजन से जिस तरह अन्य जेंडर को हाशिये पर ढकेल दिया गया वह मानवविरोधी प्रवृति हैं।

1990 तक आते-आते समलैंगिक स्त्रीवाद की धारा प्रचलित हो गयी। समलैंगिक जन के संरक्षण हेतु सार्वजनिक, सामाजिक तथा संगठनात्मक रूप से कदम उठाए गए। लगभग 1980 से 2000 तक आते-आते स्त्रीवादी संघर्ष पददलित स्त्रियों को भी संगठित और संयोजित करता है। इस चरण में थर्ड जेंडर, ट्रांसजेंडर, हिजड़ा, वैश्या तथा समलैंगिक लोग भी चर्चा का हिस्सा बने। इन मुद्दों पर सभी स्त्रीवादियों का समर्थन बेशक नहीं है परन्तु समानता का अधिकार, जीवन का अधिकार, मानवीयता का अधिकार जैसे विषयों पर सभी का मत एक है।

अब भारतीय संविधान में भी समलैंगिकों को मान्यता प्राप्त है, लेकिन अभी भी समाज के लिए वह सहज स्वीकार्य नहीं हैं। इन पर असामाजिकता एवं अनैतिकता की पाबंदियां कसते हैं। उत्तरी अमेरिका एवं पश्चिमी यूरोप से प्रारंभ होता हुआ यह आंदोलन पूरी दुनिया तक पहुँच गया था। जो अब क्वियर आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। Sheila Jeffrey (शिला जेफ्री), Audre Lorde (आंद्रे लोर्द), Merlin Fire (मेर्लिन फायर) प्रारंभ में इसकी समर्थक थीं। वयस्कों के आपसी सहमति के आधार पर बने संबंधों के पक्ष में थीं। उग्रवादी स्त्रीवादियों ने हिजड़ा, ट्रांसजेंडर तथा समलैंगिकों के मानव-अधिकारों पर भी अपनी दृष्टि डाली। इस तरह इनके मनुष्यमूलक अधिकारों को विस्तार मिला।

वजूद, अस्मिता, अस्तित्व, व्यक्तित्व, देह, जेंडर, यौन तथा यौनिकता को लेकर स्त्री विमर्श में चर्चा हुआ जो नारीवादी चर्चा के केंद्र तो बनते ही है और कालांतर में क्वीयर विमर्श के केंद में भी आ जाते हैं। अतः जेंडर चर्चा की शुरुआत औरतों तथा मर्दों के बीच की असमानता के आधार पर हुई। जिसका उल्लेख स्त्री विमर्श में देखा जा सकता है। और इस तरह स्त्रीवादी बहस की एक शाखा लेस्बियन स्त्रीवाद से होते हुए एलजीबीटी और फिर क्वीयर (Queer) विमर्श की ओर मुड़ती है।

विविध आयाम

जब कुछ बच्चों में स्त्री या पुरुष लक्षण(निर्धारित) नहीं पाये जाते हैं तो उन्हें गैर-जेंडर अनुरूप मान लिया जाता है। उदाहरणस्वरुप एक लड़की समाज प्रदत्त स्त्री भूमिका की अपेक्षा अलग या पुरुष भूमिका से मिलता-जुलता व्यवहार करती है तो उसे गैर-जेंडर अनुरूप(Gender non-confirming) या अस्वाभाविक मान लिया जाता है। " जो चीज सामान्यतः दिखाई देती है, वही प्राकृतिक है। स्त्रियों का पुरुषों के अधीन होना चूंकि एक सार्वभौमिक रीति है, इसलिए जाहीर है कि इससे अलग कोई भी बात अस्वाभाविक"[21]।

बचपन से यदि किसी लड़की का पालन-पोषण लड़के जैसे और लड़के का पालन-पोषण लड़की जैसी की जाए फिर भी उसके यौनिक अभिविन्यास को पूरी तरह बदलना बहुत हद तक संभव नहीं है। अर्थात बाह्य कारक यौनिक अभिविन्यास को हमेशा परिवर्तित करे यह आवश्यक नहीं है। किन्तु ये बाह्य कारक यौनिकता को दो मुख्य धाराओं (स्त्री यौनिकता और पुरुष यौनिकता) में बांटने का काम निश्चित रूप से करते है जिसमें 'जेंडरनुमा पक्ष' की अहम् भूमिका होती है। और इस तरह ये अन्य यौनिक अभिविन्यास को मुख्य धारा से बाहर ढकेल देते है। यही कारण है कि हम बाइनरी पहचान के बाहर, वह चाहे 'यौनिकता हो या जेंडर ही क्यों न हो' के बारे में अनभिज्ञ रह जाते है या जानते भी है तो उसे स्वीकारना नहीं चाहते। कारण तमाम तरह के पूर्वाग्रह हमें घेरे रहते हैं जिससे निजात पाना सरल नहीं होता। हर व्यक्ति समाज से जुड़ा है, समाजीकरण प्रक्रिया की पैठ अत्यंत गहरी होती है। मान लीजिय कि एक लड़की बचपन से ही स्त्रियोचित व्यवहार व तमाम स्त्रियोचित विशेषताओं को ग्रहण करती है या करना चाहती है जैसे लंबे बाल रखना, मृदु भाषी होना, पुरुष की ओर आकर्षित होना इत्यादि। इसका यह अर्थ नहीं है कि वे तमाम बच्चे जिन्हें जन्म से स्त्री निर्धारित किया गया है वे स्वयं को स्त्री ही माने। वे जेंडरनुमा रुढियों में समाहित हो यह जरुरी नहीं है। यह भिन्नता जेंडर के आधार पर दिखाई देता है तो कभी यौनिक अभिविन्यास के आधार पर।

जेंडर के आधार पर : जब भी हम किसी ऐसी लड़की को देखते है जो लड़कियों (अभिप्राय जेंडर भूमिका से है) की तरह व्यवहार नहीं करती, मृदुभाषी नहीं होती तो उसे उसके आसपास के लोग 'टॉमबॉय' कहकर संबोधित करते हैं। भिन्न व्यवहार करना उसके व्यक्तित्व का हिस्सा हो सकता है, यह उसकी पसंद हो सकती है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वह यौनिक रूप से स्त्री के प्रति ही आकर्षित होगी, स्वयं को पुरुष ही मानती होगी या ट्रांसजेंडर ही होगी। व्यक्तित्व में भिन्नता होने के बावजूद वह स्वयं को स्त्री मान सकती है और एक पुरुष के प्रति आकर्षित हो सकती हैं। या ठीक इसके विपरीत अर्थात व्यक्तित्व में भिन्नता न हो किन्तु फिर भी स्त्री के प्रति आकर्षित हो सकती है।

यौनिक-अभिविन्यास के आधार पर : एक पुरुष पुरुषोचित व्यवहार से भिन्न व्यवहार के बाद भी यौनिक रूप से पुरुष के प्रति आकर्षित हो सकता है किन्तु एक पुरुष पुरुषोचित व्यवहार के बावजूद भी पुरुष के प्रति आकर्षित हो सकता है।

व्यवहार, पसंद आदि का सम्बन्ध जेंडर से है जबकि आकर्षण का सम्बन्ध यौनिक-अभिविन्यास(sexual orientation) से है।

जेंडर और यौनिक वैविध्यता का उल्लेख करने से पूर्व यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यहां 'औरताना और मर्दाना गुण' कहने का आशय उन गुणों से है जिन्हें सामाजिक विकास प्रक्रिया के तहत सिखाया जाता हैं। दरअसल मर्दाना और औरताना गुण जैसा कुछ होता ही नहीं है। दोनों में जैविक अंतर बेशक होता है, परन्तु प्राइमरी और सेकेंडरी नहीं होता; सक्रीय और निष्क्रिय नहीं होता; सबल और दुर्बल नहीं होता; अधिक और कम महत्वपूर्ण नहीं होता। इन गुणों की घुट्टी पिलाये बगैर जो जैसा होता है वही उसकी अपनी पहचान होती है।

गैर पश्चिम देशों में गे, लेस्बियन, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेन्डर या क्वीयर जन को विभिन्न नामों से जाना और पहचाना जाता है। सामान्यतः स्त्रियोचित पुरुष और पुरुष के बीच के संबंधों के लिए जनीथ (Xanith)/खनीथ(khanith)- ओमान में, बंटूट (Bantut)- इंडोनेशिया, टोंगजी (Tongzhi)- चीन, कोथी (Kothi)- भारत, ट्रेवेस्टी (Travesty)- ब्राजिल, पुनया (Poonaya)- श्रीलंका में। इन विभिन्न नामों का प्रयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है।

चपातीबाज (Chapatibaz) एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग उत्तर भारत में सामान्यतः उन स्त्रियों के लिए किया जाता है जिनका यौनिक सम्बन्ध स्त्री से होता है।

हर संस्कृति में कुछ ऐसे लोग मौजूद है जो तथाकथित स्त्री-पुरुष से भिन्न होते हैं। जहां कुछ लोग जानते हैं तो कुछ यह नहीं जानते कि वह गे, लेस्बियन, बाईसेक्सुअल, ट्रान्ससेक्सुअल है, या इससे कुछ भिन्न। वह नहीं जानते कि यह यौनिकता का एक प्रकार है।

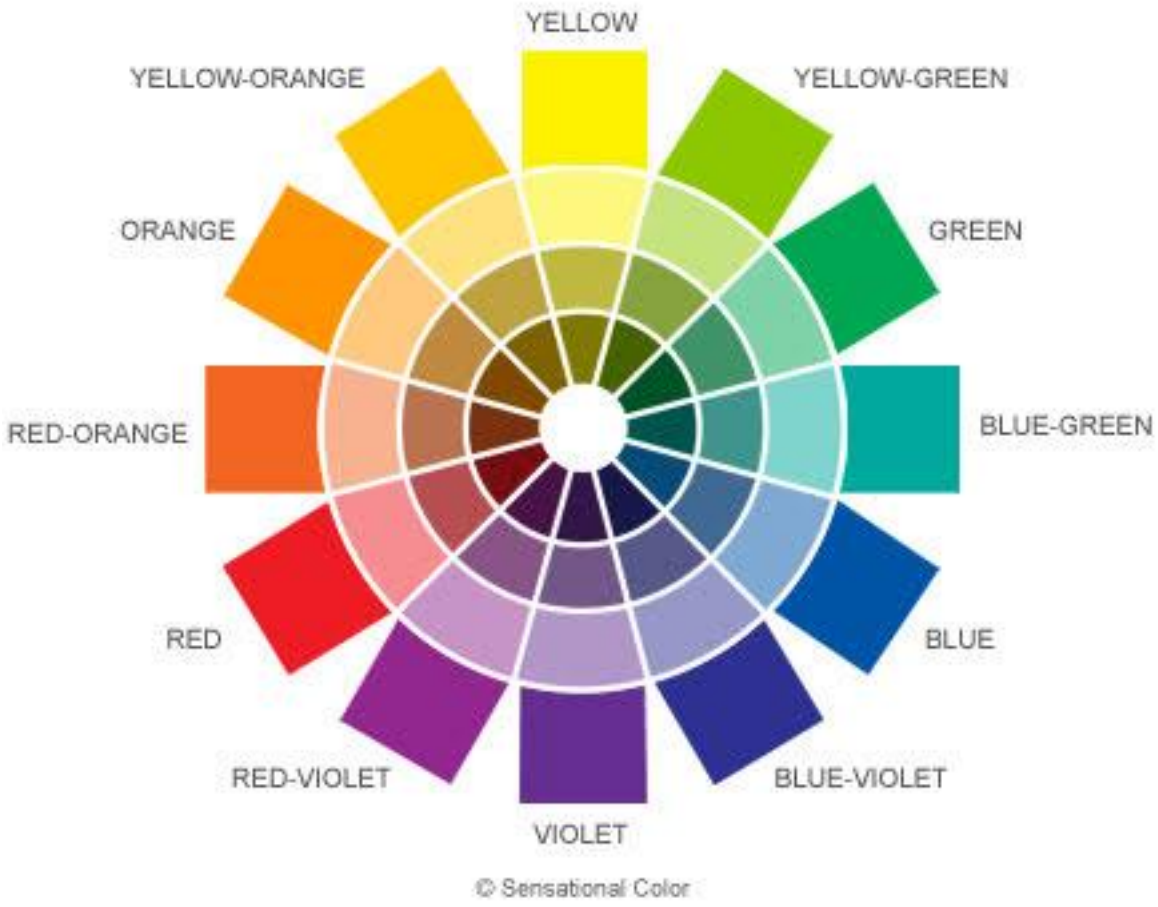

अनेक शरीर वैज्ञानिकों का मानना है कि विषमलैंगिकता के समान ही समलैंगिकता भी सहज-सामान्य है। विषमलैंगिकता से बाहर और उसके बीच कई पहचानें हैं। ऊपर दिये इस चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है। चित्र में दिखाई दे रहे पीले, नीले, लाल, हरे आदि रंगों के भीतर भी कई रंग हैं। कई लेयर हैं। और इन सबकी अपनी प्रवृतियाँ हैं। एक-दूसरे से जुड़े होने के बाद भी एक -दूसरे से बिल्कुल भिन्न।

लेबिया[22] ने अपने अध्ययन में भिन्न जेन्डर पहचानों की वास्तविकताओं का संग्रह किया हैं। लेबिया ने जिन लोगों पर अध्ययन किया उन सभी को जन्म से स्त्री जेन्डर निर्धारित किया गया था। यहाँ उनमें से कुछ उदाहरणों को देखना समीचीन होगा।

1. घर पर, 11वीं कक्षा से ही मैंने बात करनी शुरू कर दी थी कि मैं कैसा हूँ। मैं खुद को पुल्लिंग में संबोधित करता था। पहले घरवालों को बुरा नहीं लगा, कि मैं अपने बारे में लड़के की तरह बात करता था, लेकिन बाद में वे पूछने लगे की मैं इस तरह क्यों बोलता हूँ। ……एक समय आता है, जब आप को अहसास दिलाया जाता है कि आप लड़की हैं। वह समय आ गया था। मुझे यह सब बहुत बेतुका लगा। मैं सोचने लगा कैसे, क्यों ? …. मैं उस समय बहुत चुप रहने लगा था।

2. हम 8वीं कक्षा में थे और हमारी बच सेरेमनी चल रही थी । हमें मंच पे बुलाया गया। हमें लगा कि हमें फिर से कप्तान बनाया जाएगा। परंतु हेड मिस्ट्रेस ने हमारी बेइज्जती करते हुए कहा ‘इसे कैसे कप्तान बनाया जा सकता है, यह तो लड़कियों को चूमती है। उन्होंने सबके सामने यह बात बोल दी। हमें इससे बहुत ठेस पहुंची। हम घर से भी ज्यादा स्कूल को पसंद करते थे। स्कूल हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। हमें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि हम क्या करें।

3. “अंदर से मैं आदमी हूँ, पर देखने में मेरा शरीर आदमी जैसा नहीं है। इसीलिए नहाते समय या किसी और समय भी अगर मेरी नजर अपने स्तनों पर पड़ जाए, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। नहीं, मैं अपने आप को बिना कपड़ों के शीशे में कभी नहीं देखता।

4. "जब मेरे सीनियर ने पूछा राखी क्यों पहनी है, मैं चुप रहा। फिर उन्होंने कहा, 'तुम तो लड़की हो न ? ना जाने कहाँ से साहस जुटाते हुए मैंने कहा, 'हूँ भी और नहीं भी'। यह सुनते ही उन्होंने दरवाजा बंद किया और कहा, 'अब मुझे ठीक से बताओ। मैंने कहा, 'हाँ'। उन्होंने कहा, 'चलो ठीक है, पर फिर तुम सब लोगों को तुम्हें लड़की के नाम से संबोधित क्यों करने देते हो, तुम्हारा नाम क्या है? मैंने कहा, 'मेरा नाम आनंद है'। उन्होंने कहा,'फिर तो लोगों को तुम्हें आनंद कहकर पुकारना चाहिए'। मैंने पूछा, 'क्या यह संभव है?' उन्होंने कहा, 'संभव का क्या मतलब है, तुम ऐसा चाहते हो ना?' तब उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं को बुलाकर पूछा, 'यह कौन है?' उन लोगों ने मेरा लड़की वाला नाम बताया। मेरे सीनियर ने कहा, 'गलत यह आनंद है, एक आदमी, और आज से मैं चाहता हूँ कि सब लोग इसे सही तरीके से संबोधित करें"[23]।

जेंडर अभिव्यक्ति के कई आयाम है और हो सकते है। यह केवल जैविकता से नहीं जुड़ा है। यह हमेशा संभव नहीं की जन्म के समय दी गई जेंडर पहचान ही बाद में चल कर आपकी अपनी पहचान बने। परंपरा के साथ चली आ रही प्रथा के कारण जननांगों को जेंडर के साथ जोड़ दिया जाता है।

Sexual orientation (यौनिक अभिविन्यास) (- यौनिक अभिविन्यास का अर्थ किसी एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति होने वाले आकर्षण से है। यह आकर्षण प्रेम, भावना तथा यौनिकता पर आधारित होता है। यौन अभिविन्यास का दायरा व्यापक है जिसमें व्यक्ति भावनात्मक, शारीरिक तथा यौनिकता के आधार पर कभी अपने समान यौनिकता वाले व्यक्ति के प्रति, कभी विपरीत यौनिकता के प्रति, कभी दोनों के प्रति तो कभी किसी के भी प्रति आकर्षित नहीं होता है) यौन- अभिविन्यास को किसी निश्चित पसंद, तौर-तरीके के सन्दर्भ में नहीं समझा जा सकता है। यह व्यक्तिगत रूचि से जुड़ा होता है। भावनाओं की भिन्नता और व्यक्त करने के तरीके पूरी तरह से व्यक्तिक होते हैं। अभिव्यक्ति का सम्बन्ध भावनाओं से होता है जिसे नियंत्रित करने का अधिकार किसी के पास नहीं है।

Straight (सामान्य) - यदि कोई विपरीत यौन (सेक्स) के प्रति आकर्षित होता है तो उसे सामान्य (straight) अर्थात् विषमलैंगिक व्यक्ति माना जाता है।

Transgender (ट्रांसजेंडर) -उन सभी लोगों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिनकी जेंडर पहचान जन्म के समय निर्धारित जेंडर से भिन्न होती है। जैसे-ट्रांसपुरुष, ट्रांसआदमी, एम टू एफ(पुरुष से स्त्री), एफ टू एम(स्त्री से पुरुष), ट्रांससेक्सुअल। ट्रांसजेंडर शारीरिक संरचना या जननांग को परिवर्तित करने हेतु हॉर्मोन थेरेपी या सर्जरी का सहारा लेते हैं। लेकिन सभी ट्रांसजेंडर ऐसा नहीं करते है।

Hijda (हिजड़ा) -एक सांस्कृतिक पहचान वाले लोग जो भारत और दक्षिण एशिया के कुछ भागों में निवास करते है। जैसे किन्नर, जोगप्पा, अरावनी आदि। इनकी अपनी परंपरा और क्षेत्रीय पहचान होती है। 'किन्नर' जिन्हें आम भाषा में हिजड़ा भी कहा जाता है। मूल रूप से 'हिजड़ा' उर्दू शब्द है। हिन्दी में इन्हें 'हिजड़ा' तथा 'किन्नर' शब्द से संबोधित किया जाता है। चूंकि हमारे प्राचीन ग्रंथों में इनके लिए 'क्लीव' तथा 'तृतीय पंथी' के साथ-साथ 'किन्नर' शब्द की भी संकल्पना दिखायी देती है, यही कारण है कि इन्हें किन्नर कहकर भी संबोधित किया जाता है। हर समाज में हिजड़ा समुदाय होता है। जिनके लिए विभिन्न भाषाओं में विभिन्न शब्द हैं। अलग-अलग समाजों में अलग -अलग संस्कृति है। " साधारणतः हिजड़ों के सात खानदान हैं। भिंडी बाजार का, बुलाक का, लालन का, लखनऊ का, पूना का, दिल्ली का, हादीर इब्राहीम का। उनमें जगहों के हिसाब से थोड़ा-बहुत बदलाव आता है। मुख्य रूप से ये सातों खानदान होते हैं। हर खानदान का एक मुखिया होता है, उसे नायक कहते हैं। उसके बाद उसके नीचे ढलान होती है। इसी ढलान में गुरु होते हैं। हिजड़ा समाज में गुरु और नायक, इनका ही कानून चलता है। उसका निर्वाह नहीं किया तो सजा होती है। हर खानदान के नियम और कानून अलग-अलग होते हैं। पर हिजड़े किसी को भी ये नियम नहीं बताते। वो गुप्त होते हैं" [24]। किन्नर या हिजड़ा को पोटा, क्लीव, वर्षधर, षण्व, उभय-व्यंजन आदि नामों से भी जाना जाता है। कई बार हिजड़ा और नपुंसक को एक मान लिया जाता है परन्तु नपुंसक

हिजड़ो से भिन्न होते है। जो पुरुष वीर्य के पर्याप्त मात्रा तथा उत्तेजना की कमी के कारण स्त्री के साथ संभोग में असमर्थ होता है उसे नपुंसक कहा जाता है।

Third gender (थर्ड जेंडर) - थर्ड जेंडर ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो हिजड़ा, इंटरसेक्स व्यक्ति या ट्रांसजेंडर व्यक्ति होता है। जो न स्त्री माने जाते है और न पुरुष। दक्षिण एशिया के अलग-अलग क्षेत्रों में सांस्कृतिक वैविध्यता के कारण इनकी अलग-अलग पहचान है।

Intersex (इंटरसेक्स)- मानव के शरीर रचना में अलग-अलग प्रकार की विविधताएँ होती हैं। अदृश्य विविधताओं, शरीर के प्रजनन अंगों, हॉर्मोन, क्रोमोजोम के स्तर पर जन्मजात अंतर के विविधता को इंटरसेक्स कहते हैं। इंटरसेक्स विशेषताएं जननांग तक ही सीमित नहीं होती है बल्कि जनन-ग्रंथि या क्रोमोसोम्स वैविध्यता से भी जुड़ी हो सकती है।

Androgyny (ऐंड्रोगीनी)- 'औरताना' व 'मर्दाना' गुणों का एक अद्भुत समन्वय।

Transphobia (ट्रांसफोबिया) - ट्रांस मनुष्यों को समाज द्वारा निर्धारित जेंडर के अनुरूप व्यवहार न करने के कारण अप्राकृतिक समझना, बीमार मानना या शक भरी निगाहों से देखना, उनकी जेंडर पहचान का मजाक उड़ना, भेदभाव एवं हिंसा करना, उनके मानव अधिकारों को न मानना ट्रांसफोबिया है।

Homophobia (होमोफोबिया) - लेस्बियन, गे, बाईसेक्सुअल लोगों को अप्राकृतिक या बीमार समझना, उन्हें घृणा की दृष्टि से देखना होमोफोबिया कहलाता हैं। ये सोच अवैज्ञानिक और परम्परागत विषमलैंगिक सामाजिक ढांचे की ओर इशारा करता है।

Agender (एजेंडर) - ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जो स्वयं को जेंडर पहचान अर्थात पुरुष या महिला के रूप में वर्गीकृत नहीं करता।

Androgynous (उभयलिंगी)-मर्दाना और स्त्री लक्षण का संयोजन या एक गैर-परंपरागत जेंडर अभिव्यक्ति।

Cisgender (सिसजेंडर) -सिसजेंडर व्यक्ति वे होते हैं; जिनकी जेंडर पहचान जन्म के समय निर्धारित उनकी जेंडर पहचान से मेल खाती है।

Gender binary (जेंडर बाइनरी) -जेंडर बाइनरी का आशय जन्म के समय स्त्री जेंडर या जन्म क समय पुरुष जेंडर निर्धारण से है।

Gender confirming (जेंडर कॉनफॉर्मीन्ग) - एक व्यक्ति जिसका जेंडर अभिव्यक्ति उस जेंडर क लिए अपेक्षित सांस्कृतिक मानदंडों के मुताबिक लड़के और पुरुष मर्दाना हैं या होने के लिए बाध्य है तथा लड़कियां और महिलाएं है या होने के लिए बाध्य है। सभी सिसजेंडर इन मानदंडों के अनुरूप नहीं होते। सभी ट्रांसजेंडर भी एक जैसे नहीं होते है, कुछ इन मानदंडों के अनुरूप होते है और कुछ इन मानदंडों को स्वीकार नहीं करते है।

Gender Expression (जेंडर एक्स्प्रेसन) - एक व्यक्ति की बाह्य अभिव्यक्ति जिसमे व्यक्तिगत शैली, रहन-सहन का तरीका आदि शामिल है। जेंडर अभिव्यक्ति को आम तौर पर पुरुष या स्त्री क रूप में वर्गीकृत किआ जाता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त करता है। जेंडर अभिव्यक्ति व्यक्तियों के जेंडर पहचान के अनुरूप हो सकती है या नहीं भी।

Gender fluid (जेंडर फ्लूइड) - कोई व्यक्ति जिसकी जेंडर पहचान या अभिव्यक्ति पुरुष और स्त्री के बीच बदलती है।

Gender Identity (जेंडर आइडेंटिटी) -व्यक्ति की आतंरिक भावना जिसके साथ वे स्वयं को पहचानते हैं।

Gender marker (जेंडर मार्कर) - पद्नाम (पुरुष, महिला या अन्य) जो किसी व्यक्ति के आधिकारिक रिकॉर्ड, जैसे की जन्म प्रमाण पत्र या ड्राइविंग लाइसेन्स पर प्रमाणित हो। एक ट्रांसजेंडर की पहचान वही मानी जाती है जो उसे जन्म के समय दी जाती है, जब तक की वह वैध रूप से अपनी यौनिकता (सेक्सुअलिटी) परिवर्तित न करा लें।

Gender Non-confirming (जेंडर नॉन-कॉनफॉर्मीन्ग)- व्यक्ति की जेंडर अभिव्यक्ति अपेक्षित जेंडर अभिव्यक्ति से जब भिन्न हो।

Butch (बुच)- लेस्बियन यौनिक संबंधों में पुरुष जैसी भूमिका निभाने वाली स्त्री।

Transvestism (प्रति-लैंगिक वस्त्रसज्जा)-
उन लोगों को कहते हैं जो विपरीत सेक्स के कपड़े पहनकर, उनकी तरह श्रृंगार करके रतिक्रिया में उत्तेजना साहचर्य, प्रगाढ़ भावनाओं तथा बंधुत्व के आधार पर रोमानी सम्बन्ध में जुड़े होते हैं; परन्तु यह आवश्यक या अनिवार्य नहीं है कि वे एक-दूसरे के प्रति यौनिक रूप से आकर्षित हों। पुरुष, जनाना कपड़े पहनना पसंद करता है और स्त्री, मर्दाना कपड़े पहनना।

Tribade (ट्राइबेड) - इस शब्द का सम्बन्ध लेस्बियन समलैंगिकता से जुड़ा है। विशेषतौर पर उस लेस्बियन के लिए जो यौनिक संबंधों के दौरान तथाकथित पुरुष भूमिका का निर्वाह करती है। अर्थात विषमलैंगिक संभोग के दौरान पुरुष की भूमिका जैसे व्यवहार का अनुकरण लेस्बियन संबंधों में करना।

Dyke (डाइक)- बीसवीं सदी में इस शब्द का प्रयोग लेस्बियन (मर्दाना हाव-भाव, व्यवहार आदि) स्त्रियों के लिए किया जाता था। पश्चिम यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका में 'डाइक मार्च'(रैलियां) का आयोजन बड़े धूम-धाम से किया जाता है।

Butch/Femme (बुच/फम्म)- इस शब्द का प्रयोग लेस्बियन संबंधों के लिए किया जाता है। जिस सम्बन्ध में एक का हाव-भाव मर्दाना (बुच) होता है तथा दूसरे का हाव-भाव स्त्रियोचित (फम्म) होता है।

Chapstick Lesbian (चॉपस्टिक लेस्बियन)- वे लेस्बियन जो फम्म भी लगे तथा बुच भी।

Stud (स्टड) - स्टड शब्द अफ्रीकी अमेरिकी समुदाय में प्रसिद्ध है। इस शब्द का प्रयोग स्त्री या पुरुष की पारंपरिक संरचना से भिन्न या पुरुषोचित व्यवहार करने वाली लेस्बियन के लिए किया जाता है।

Pansexual- सभी सेक्स तथा जेंडर के प्रति यौन आकर्षण।

Asexual- वे लोग जिनमें यौन इच्छाएं नहीं होती हैं। वह व्यक्ति जो दूसरे व्यक्ति के साथ रोमांटिक सम्बन्ध रखना चाहता है परन्तु यौन सम्बन्ध नहीं चाहता।

Polyamorous- एक से अधिक व्यक्तियों से यौन सम्बन्ध रखने वाले लोग को polyamorous कहा जाता है।

Queerplatonic- समान जेंडर के दो व्यक्तियों के बीच का गहरा रिश्ता जिनमें यौन सम्बन्ध नहीं होता।

Swinging- एक-दूसरे के प्रति समर्पित होने के बावजूद आपसी सहमति से अन्य लोगों से यौनिक सम्बन्ध बनाना।

Drag- किसी अदायगी या अभिनय के लिए दूसरे जेंडर के अनुरूप सजना और प्रदर्शन करना।

सात्रे- स्त्री का वस्त्र धारण करने वाला पुरुष/हिजड़ा।

कड़े ताल - पुरुष कपड़ा धारण करने वाला हिजड़ा।

गिरिया- गिरिया कोथी के पुरुष साथी होते हैं। ये पुरुष होते हैं तथा अपनी पहचान भी पुरुष मानते हैं। [25]

कोथी -शरीर से पुरुष किन्तु स्त्री के रूप में एहसास करने वाले लोगों को कोथी कहते है। ये पुरुषों के प्रति आकर्षित होते हैं। पुरुषों के अलावा किसी स्त्री या किसी ट्रांसजेन्डर व्यक्ति के तरफ भी आकर्षित हो सकते हैं। ये अधिकतर पुरुष रूप में रहते हैं। [26]

छिबरा - लिंग के विच्छेदन किये जाने को छिबरा कहा जाता है।

बुचरा माता - किन्नरों की देवी।

समलैंगिकता - अब तो वैज्ञानिक रूप से भी यह स्पष्ट हो चूका है कि समलैंगिकता न तो पाप है, न तो प्रकृतिविरोधी न ही कोई अपराध और न ही बीमारी। वैसे तो मनोविज्ञान के क्षेत्र में सन् 1973 में ही समलैंगिकता के प्रति नकारात्मकता खत्म हो चुका था। किन्तु फिर भी इसे लंबे समय तक बीमारी माना जाता रहा। यह समझना होगा की कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें विषमलैंगिक संबंधों में रूचि नहीं होती या उनके प्रति आकर्षण नहीं होता। ऐसे युग्म कुछ प्राणी एवं जीवियों में पाए जाते हैं। मनुष्यों में भी यह आकर्षण होता हैं, अचंभित करने जैसा कुछ भी नहीं है। यह आकर्षण केवल शारीरिक नहीं होता बल्कि इसमें मानसिकता और भावनात्मकता भी शामिल होता है। पर इन्हें भ्रामक आख्यानों से गढ़ने और अश्लीलता से मढ़ने की जबरदस्त कोशिश की गई है। इसे पिडोफिलिया (बाल यौन-शोषण) से भी जोड़ा गया है।

समलैंगिकता की परिभाषा को लेकर कोई एक मत नहीं है। अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग समय में अलग-अलग रूपों में परिभाषित किया हैं। इन परिभाषाओं पर समाज के प्रभाव (समलैंगिकता के प्रति तत्कालीन समाज की विचारधारा) को भी देखा जा सकता है। कुछ परिभाषाएं नीचे उद्धृत हैं :

सीमोन समलैंगिक स्त्री के बारे में लिखती है- पुरुषोचित वेशभूषा धारण करने वाली और पुरुषों की तरह दिखने की कोशिश करने वाली स्त्री को हम समलिंगी कामुक स्त्री कहते हैं। उसके पुरुषों जैसे बाह्य रूप से

ऐसी शंका होती है कि उसके 'हार्मोन' अस्वाभाविक हैं। समलिंगी कामुकता को पुरुषत्व की बराबरी में रखना गलत होगा। हरम में रहनेवाली अनेक स्त्रियों में समलिंगी कामुकता होती है। पुरुषोचित गुणों वाली कुछ स्त्रियाँ उभयलिंगी कामुक होती हैं। .. समलिंगी स्त्रियों की शारीरिक रचना दूसरी स्त्रियों से भिन्न नहीं होती। शरीर-रचना के आधार पर उनकी कामुकता का निर्णय करना सहज नहीं। [27] ठीक इसी तरह "एक समलिंगी कामुक पुरुष में पूर्ण पुरुष की सारी विशेषताएं रहती हैं" [28]। सीमोन समलैंगिक स्त्री के दो प्रकारों की चर्चा करती है -

पहला- पुरुष या स्त्री शरीर की रचना जैविक तत्वों से होता है। किन्तु गर्भ में भ्रूण के विकास के समय यह प्रभाव बदल भी सकता है। कुछ स्त्रियों में पुरुष के गुण आ जाते हैं और उनके पुरुष अवयव धीरे-धीरे बढ़ते हैं। हम अक्सर देखते है कि इस प्रकार की लड़कियों में खेलकूद के प्रति विशेष लगाव होता है। वे लड़कों में बदल जाती हैं।

दूसरा- कुछ स्त्रियों में पुरुष 'हॉर्मोन' का प्रभाव होता है, उन्हें भी स्त्री ही कहते हैं। उनमें पुरुष-यौन की कुछ विशेषताएं पाई जाती हैं जैसे मुख पर बालों का होना। स्त्री-हॉर्मोन की कमी के कारण कुछ स्त्रियों में बचपना अधिक रहता है क्योंकि उनका विकास संतुलित नहीं होता। ऐसी विशेषता स्त्री समलिंगी कामुकता की पहचान है। जिस स्त्री में स्फूर्ति और शक्ति रहती है, वह हमेशा सक्रिय रहती है। वह निष्क्रियता पसंद नहीं करती। जिस स्त्री का विकास ठीक नहीं होता, जिसे उचित परिवेश नहीं मिलता, वह अपनी हीनता के भावों की पूर्ति के लिए शक्तिशाली गुणों को प्रदर्शित करती है। यदि उसकी काम-भावना भी अविकसित रहती है तो उसे पुरुष के आलिंगन और लाड़ पसंद नहीं आते। [29] लेकिन हर वह "स्त्री जिसमें पुरुषोचित गुण हों, हमेशा समलिंगी कामुक नहीं होती" [30]।

समलिंगी कामुक स्त्रियों में दो दृष्टिकोण देखे जाते हैं। कुछ स्त्रियाँ निष्क्रियता पसंद नहीं करती। कुछ ऐसी हैं जो अन्य स्त्रियों कि बाँहों में शांत भाव से सहारा लेना पसंद करती हैं। उन दोनों अंतरों की आपस में

प्रतिक्रिया होती है। जो वांछित है, उसकी सहायता से अवांछित को समझा जा सकता है किन्तु यह अंतर अपनी इच्छानुसार किया जाता है। कुछ समलिंगी कामुक स्त्रियाँ पुरुषों की नकल करती हैं, पर उन्हें पुरुष की संज्ञा देना अनुचित होगा। [31]

समलैंगिक स्त्रियों की जिस प्रकार आलोचना की जाती है उसकी आलोचना करते हुए सीमोन कहती है कि "समलिंगी स्त्री निराकार और नगण्य होती है, मानो वह पुरुष की बराबरी कर रही हो। उसकी खेलकूद, राजनीतिक और बौद्धिक क्षमता और अन्य स्त्रियों के प्रति उसकी काम-भावना से यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि वह पुरुष का विरोध कर रही है। वह जिन मान्यताओं को लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ती है, आमतौर पर उन्हें अस्वीकार किया जाता है और कहा जाता है कि वह पुरुष का विरोध कर रही है" [32]।

श्री रामनाथलाल 'सुमन' के अनुसार - "एक व्यक्तिगत आकर्षण भी होता है, जिसके प्रभाव से स्त्री-स्त्री एवं पुरुष-पुरुष की ओर आकर्षित होते हैं। इस प्रकार का आकर्षण प्रायः जातीय आकर्षण से भी अधिक तीव्र होता है। इसका मूल भी बहुत कुछ वही है जो स्त्री-पुरुष के पारस्परिक झुकाव में होता है। इस प्रकार का झुकाव जब भोगवृत्ति की ओर रहता है तो उसे स्वजातीय-व्यभिचार-वृत्ति (Homosexual Tendency) कहते हैं"[33]।

प्रसिद्ध गणितज्ञ शकुंतला देवी के अनुसार "आज की दुनिया में अधिकांश वयस्कों के लिए विषमलैंगिक संभोग आत्म-अभिव्यक्ति का अधिमानित तरीका है लेकिन कई लोग यौन व्यवहार के अन्य रूपों जैसे अपने ही समान यौनिकता वाले व्यक्ति के प्रति भी आकर्षित होते है। ऐसे पुरुष और महिलाएं जिनमें स्वभावतः इस तरह के प्रबल मनोभाव की अनुभूति हो, उन्हें समलैंगिक कहा जाता है" [34]।

लेखिका गीतांजलि चटर्जी के अनुसार - "कई मनुष्यों के भीतर का छुपा हुआ विपरीत लिंग उसके बाह्य रूप अथवा उसके समूचे अस्तित्व पर हावी हो जाता है। ऐसे दोहरे व्यक्तित्व को हम आम भाषा में समलैंगिक कहते हैं"[35]।

समलैंगिकता को पहले बीमारी माना जाता था। सन् 1973 में अमेरिकन मनो-चिकित्सक संघ तथा 1980 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने समलैंगिकता को बीमारी की श्रेणी से हटा दिया था। अब समलैंगिकता को अन्य यौनिक अभिविन्यास की तरह सामान्य माना जाता है, जैसे- विषमलैंगिकता। समलैंगिक व्यक्तियों में अलग-अलग रूचि तथा कार्य करने की क्षमता वैसी ही होती है जैसे कि एक विषमलैंगिक व्यक्ति में। आश्चर्य तो इस बात की है कि यह सब जानने के पश्चात् भी लोग समलैंगिक व्यक्तियों के इलाज के लिए विभिन्न हानिकारक मनोचिकित्सक उपचारात्मक साधनों के प्रयोग पर बल देते है। दुनिया के देशों तथा भारत में समलैंगिकता अब कोई अपराध नहीं है।

मल्लीका सेनगुप्त समलैंगिक लोगों की मौजूदगी के बारे में लिखती है कि "हो सकता है कि यह हमारी नज़रों को अटपटा लगे, लेकिन इस तरह के परिवारों को हम अस्वीकार नहीं कर सकते, उन्हें तो राष्ट्र और समाज, कानून और दर्शन ने स्वीकृति दे दी है। हमारे समाज में इस तरह का कोई परिवार नहीं बन पाने के बावजूद बहुत सारे स्त्री और पुरुष समलैंगिकता में सुख पा रहे हैं, उनमें से किसी न किसी को हम सभी पहचानते हैं। अल्पसंख्यक होने के बावजूद इनका अस्तित्व तो है ही" [36]।

समलैंगिकता पर उठाये जाने वाले सवाल -

1.क्या समलैंगिकता का सम्बन्ध पसंद से जुड़ा है?

2.क्या समलैंगिकता अप्राकृतिक है?

3.क्या यह जन्मजात होता है?

4.क्या समलैंगिकता पाश्चात्य देन है ?

5.क्या यह किसी प्रकार का मानसिक विकार है ?

डॉ. प्रदीप प. पाटकर लिखते हैं कि "मई 2013 में आये हुए Diagnostics & Statistics Manual DSM-V में मानसिक विकारों के वर्गीकरण में GID जेन्डर आइडेंटिटी डिसऑर्डर, डिसऑर्डर ना होकर उसके अलगाव की वजह से और उसके प्रति समाज की प्रतिकूल प्रतिक्रिया और अवहेलना की वजह से आनेवाली 'कटुता' Gender Dysphori है" [37]

सुधीर चंद्र 'भूपेन खख्खर: एक अन्तरंग संस्मरण' में भूपेन खख्खर की 'समलैंगिकता के बारे में विचार' की चर्चा करते हुए लिखते है कि "मुझसे वह समलैंगिकों की जन्मगत प्रवृति की बात करता था जब कि टिमथी हाइमन को उसने लिखा : 'ज्यादातर समलैंगिक प्रकृति से या सामाजिक दबाव की वजह से प्रोमिस्क्यूअस होते हैं, सामाजिक दबाव का अर्थ विस्तार करते हुए उसने लिखा कि अब स्थायी समलैंगिक संबंध संभव हो गये हैं, लेकिन 60 और 70 के दशक में इन्हें बुरा माना जाता था। .....पर मानना, शायद, वह यही चाहता था की समलैंगिक प्रोमिस्क्यूटी के लिए जिम्मेदार असल में प्रकृति ही है। "[38]।

समलैंगिकता पर अप्राकृतिकता का जो आरोप लगाया जाता है उसके संबंध में सुधीर चंद्र पूछते है कि "क्या किसी कर्म का अप्राकृतिक होना काफी है उसे दंडनीय अपराध बनाए जाने के लिए ? किसी कर्म का प्राकृतिक या अप्राकृतिक होना-जिस हद तक इस तरह का निर्धारण संभव है- उसे अपराध की श्रेणी में न तो लाता है और न ही उससे बाहर रखता है"[39]।

समलैंगिकता को पश्चिमी आयात मानने वाले लोगों की सोच दरअसल उनकी अपनी सोच नहीं बल्कि उपनिवेशवाद द्वारा स्थापित मूल्यों तथा आचरणों की ईजाद है। यह नज़रिया औनिवेशिक उदगम का परिणाम है। यह कहना गलत होगा कि समलैंगिकता पश्चिमी देशों की नक़ल पर एक फैशन की तरह बढ़ा है। समलिंगी आकर्षण हमेशा से रही है। चिकित्सा विशेषज्ञ मानते हैं कि यह अचानक पैदा हुई आदत

या विकृति नहीं है। बारहवीं सदी में वराह मिहिर ने अपने ग्रन्थ 'बृहत जातक' में कहा था कि समलैंगिकता पैदाइशी होती है और इसे बदला नहीं जा सकत।

बाइनरी जेंडर व्यवस्था की प्रक्रिया जिन्हें लंबे समय तक भारतीय परंपरा के रूप में प्रचारित किया जाता रहा है वह औपनिवेशिक दौर में निर्मित अवधारणा है। भारतीय इतिहास भारतीय सभ्यता के विकास से जुड़ा है। जो मिश्रित तथा बहुस्त्रोतपरक है। एलजीबीटी अस्मिताओं पर पाश्चात्य का आरोप लगाने वाले विचारधारा की सोच ही दरअसल यूरो-केन्द्रित है। एडवर्ड सईद ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरिएंटलिस्म' में विस्तार से इस बात की चर्चा की है कि हम आज भारतीय सास्कृतिक इतिहास को जिस रूप में जानते हैं, उसे औपनिवेशिक दौर में गढ़ा गया। सरोज सिंह लिखती है -"उपनिवेशित समाज तीन स्थितिओं से गुजरता है। पहली स्थिति में वह स्वयं को हिन और औपनिवेशिक प्रभुओं को अपने से श्रेष्ठ मान लेता है या मानने के लिय बाध्य किया जाता है। दूसरी स्थिति में वह औपनिवेशिक प्रभुओं द्वारा निर्धारित श्रेष्ठता के मानदंड के आधार पर स्वयं को औपनिवेशिक प्रभुओं के बराबर सिद्ध करने का प्रयास करता है। तीसरी स्थिति में वह औपनिवेशिक प्रभुओं द्वारा निर्धारित श्रेष्ठता के मानदंड को चुनौती देता है"[40]।

Androgen insensitivity Syndrome (एन्ड्रोजन इंसेनसिटिविटी सिन्ड्रोम) - यह एक ऐसा सिन्ड्रोम है जिसमें व्यक्ति के शरीर की बनावट स्त्री (समाज प्रदत्त पहचान) की तरह और उसके क्रोमोसोम 'xy' अर्थात पुरुष (समाज प्रदत्त पहचान) के तरह होते हैं। गुड़गांव स्थित फोर्टिस अस्पताल की डॉ. सुनीता मित्तल (प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग की प्रमुख) बताती हैं कि 'एंड्रोजन इंसेनसिटिविटी सिन्ड्रोम' माँ से बच्चे में आती है तथा यह दो तरह के होते हैं- पार्शियल और कम्पलीट।

Partial androgen insensitivity Syndrome (पार्शियल एंड्रोजन इंसेनसिटिविटी सिन्ड्रोम) - इसका पता जन्म से ही चल जाता है। इसमें गुप्तांग ठीक से विकसित नहीं होते। अंडाशय और गर्भाशय नहीं होते और इस कारण माहवारी नहीं हो पाती। ऐसे बच्चे अधिकतर लड़के के तौर पर ही बड़े होते हैं। हालांकि

ये उनकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वो अपने आप को महिला मानते हैं या पुरुष। उसके बाद उनकी काउंसलिंग की जाती है और कुछ सर्जरी करके उनके गुप्तांगों को उनके जेन्डर के अनुसार ढ़ालने की कोशिश होती है।

Complete androgen insensitivity Syndrome कम्प्लीट एंड्रोजन इंसेनसिटिविटी सिन्ड्रोम - इस सिन्ड्रोम में व्यक्ति के गुप्तांग लड़कियों की तरह ही होते हैं इसलिए इसका अंदाजा माहवारी न होने पर ही लगता है। इसमें बच्चा महिलाओं की तरह ही बड़ा होता है और उसमें महिलाओं का शरीर व उन्हीं की जैसी भावनाएं होती हैं। उनके वैवाहिक जीवन में भी कोई समस्या नहीं आती। उनमें पुरुषों जैसे कोई लक्षण नहीं होते हैं। इस सिन्ड्रोम के बारे में लोगों को ना के बराबर पता होता हैं। कई लोग तो पूरी जिंदगी गुजार लेते हैं लेकिन उन्हें इसका पता नहीं चलता [41]

क्वीयर

विषमलैंगिकता, समलैंगिकता, ट्रांससेक्सुअलिटी, ट्रांसजेंडर यौनिकता का एक हिस्सा है। एक प्रकार है। लेकिन समाज में केवल ये सेक्सुअलिटी(यौनिकता) ही नहीं हैं। ये वह यौनिकता है जिन्हें हम और आप जानते है या जिनमें से कुछ को मान्यता प्राप्त हैं या जिनमें कुछ अपने पहचान को बयां करते हैं। कुछ लोग अपनी पहचान को जहा एक ओर बयां करते हैं (एल,जी,बी,टी) वही बहुत लोग ऐसे भी हैं जो अपनी चाहत पर किसी पहचान का ठप्पा लगाना नहीं चाहते (क्वीयर) पर स्वयं को बने बनाये खांके(स्त्री-पुरुष) से अलग मानते है। जेंडर पहचान और यौनिकता हमेशा एक-दूसरे से सम्बंधित हो यह ज़रूरी नहीं है। मान लीजिये एक व्यक्ति जिसे जन्म से पुरुष पहचान मिली है और वह स्वयं को पुरुष मानता है पर ज़रूरी नहीं कि वह पुरुष है इसीलिए स्त्री के लिए ही आकर्षित हो। वह जिसके लिए आकर्षित हो, वह भी उसकी एक पहचान बन सकती है। ठीक इसी प्रकार कोई व्यक्ति जिसे जन्म से स्त्री निर्धारित किया गया है, हो सकता है वह यौनिक रूप से पुरुष के प्रति आकर्षित हो लेकिन स्वयं को मान्य स्त्री जेंडर मानकों में फिट नहीं पाती। यह

पहचान उसकी अपनी पहचान बन सकती है। 'सैफो फॉर इक्वालिटी के दो जपुजेनिव(जन्म से पुरुष जेंडर निर्धारित व्यक्ति) सदस्य अपने आप को लेस्बियन मानते हैं। इन दोनों में से एक सर्जरी करवाना चाहते है ; दूसरे कहते हैं कि वे अपने शरीर को बदलना नहीं चाहते पर "अन्दर से अपने आप को औरत महसूस करते हैं और औरतों से प्यार करते हैं"- जिनके साथ वे "औरतों जैसे लेस्बियन यौन सम्बन्ध" रखना चाहते हैं'[42]।

क्वीयर संबंधों को समझने से पहले यह समझना जरुरी होगा कि वे यौन सम्बन्ध जिसमें भावनात्मकता न हो, ऐसे व्यवहार प्रेमहीन या शोषणकारी सामाजिक व्यवस्था या हिंसा के सन्दर्भ में विकसित हो सकते हैं। उदाहरण स्वरुप जेल जैसी सीमित स्थितियों में या अन्य परिस्थितियों में पुरुष पुरुषों से या लड़कों से बलात्कार करते हैं ताकि वे अपनी शक्ति दिखा सके। इस प्रकार का व्यवहार केवल हिंसक प्रदर्शन है न कि समलैंगिक प्यार या इच्छा।

क्वीयर शब्द का सामान्य अर्थ विचित्र, अद्भुत, अलग, अनोखा आदि होता है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में क्वीयर शब्द का प्रयोग ब्रिटेन में उन पुरुषों का उपहास उड़ाने के लिए किया जाता था जो 'स्त्री प्रवृति' वाले या 'गे' थे। धीरे-धीरे इस शब्द का अर्थ बदलता गया लगभग 1980 के आसपास LGBT से जुड़े आंदलनों, संगठनों तथा उनके कार्यकर्ताओं ने इस शब्द के 'अलग' होने के अर्थ को सकारात्मक रूप में स्वीकार किया तथा इसे व्यापकता से ग्रहण किया और अब इस शब्द का प्रयोग 'नॉर्मेटीविटी' के विरोध में किया जाता है। नॉर्मेटीविटी (Normativity) का आशय उन दायरों और नियमों से है जिन्हें समाज 'नॉर्मल' कहकर अपना लेता है। जिन्हें समाज किनारे पर ढकेल देता है उसे 'एब्नार्मल' कहा या मान लिया जाता है।'क्वीयर' समाज द्वारा बहिष्कृत इन्हीं किनारे किये गये लोगों की बात करता है। उन्हीं का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए स्त्रि-पुरुष के बीच का आकर्षण ही 'नार्मल' है, नॉर्मेटिव(Normative)है।

1990 में न्यूयार्क में चल रहे प्राइड परेड में क्वीयर नेशन (Queer Nation) नाम के संगठन ने एक लीफलेट्स बांटे। इस लीफलेट्स पर लिखा था 'queer Read This'. इस लीफलेट्स को बांटने का उदेश्य यह मानना था कि 'क्वीयर' शब्द का प्रयोग केवल 'गे' के लिए किया जाना उचित नहीं है। क्वीयर नेशन इस सोच से ताल्लुक रखने वाले और लोगों को अपने साथ जोड़ना चाहता था। यह LGBT लोगों के साथ होने वाले हिंसा के खिलाफ खड़ा हुआ। इसके अनुसार क्वीयर का सम्बन्ध केवल बने-बनाये जेंडर और सेक्सुअलिटी से भिन्न दृष्टिकोण रखना ही नहीं है बल्कि इसका व्यापक अर्थ है। क्वीयर एक तरफ LGBT की बात करता है तो दूसरी तरफ LGBTQ+ की भी बात करता है। 'क्वीयर' शब्द मानकीकरण और सामान्यीकरण पर सवाल उठाता है तथा हर अलग विचार और अलग पहचान को स्थान देता है। कौस्तव बक्शी और रोहित के. दासगुप्ता सामान्यीकरण की नीति पर सवाल उठाते हुए लिखते हैं कि "आवश्यकता पड़ने पर शक्ति का उपयोग कर अनिवार्य विषमलैंगिकता अपनी पवित्रता को सुरक्षित तथा पुनःस्थापित करने के लिए क्वीयर चिह्नित पहचानों को बड़ी सहजता से किसी नियम में बांध तथा ख़ारिज कर सकता है" [43]।

क्वीयर का सम्बन्ध केवल निजता के अधिकार से नहीं है बल्कि यह सार्वजनिक होने की स्वतंत्रता से भी जुड़ा है। यह जेंडर और यौनिकता के आधार पर हाशिये पर ढकेले गये लोगों की बात तो करता ही है परन्तु व्यापकता में यह स्वयं को परिभाषित करने के रवैये पर आधारित है।

Queer theory (क्वीयर थ्योरी)

'क्वीयर थ्योरी' के उद्भव में उन नारीवादियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिन्होंने जेंडर और सेक्सुअलिटी पर विचार-विमर्श व अध्ययन कर सोचने और तार्किकता से प्रश्न करने की प्रणाली को जन्म दिया। इन अध्ययनों का परिणाम ही है जिसने जेंडर और सेक्सुअलिटी को देखने का पूरा आयाम बदला। 1990 के

दशक में गे एवं लेस्बियन अध्ययन का रूपांतरण क्वीयर अध्ययन के रूप में होता है। नारीवादी व वैज्ञानिक कैथी जे कोहेन ने 1997 में लिखा कि हम में से कई लोग आज भी एक नई राजनीतिक दिशा और एजेंडा की खोज में लगे हुए हैं। इसका मकसद ये नहीं कि हम भी समाज के प्रभावशाली ढांचे से अपने को जोड़ लें, बल्कि ये उन ढांचों पर सवाल उठाता है जो समाज में भेद-भाव, उंच-नीच को बढ़ावा देते हैं, जिनकी वजह से एक तबके का दूसरे पर अत्याचार बना रहता है, और बढ़ता भी रहता है। हममें से कुछ लोगों के लिए क्वीयर सोच गे और लेस्बियन यानी समलैंगिक समाज की भी परंपराओं और राजनीति पर सवाल उठाने का मौका रहा है [44]।

क्वीयर होने का अर्थ है मानकों और निर्धारित नियमों पर सवाल खड़े करना। क्वीयर होना अलग होना है और अलग होना शर्म नहीं है। क्वीयर किसी निश्चित सन्दर्भ से बेशक नहीं जुड़ा है लेकिन फिर भी अभी इसे कुछ सन्दर्भों में प्रयोग किया जाता है। यह यौन-झुकाव, जेंडर, सेक्स तथा संबंधों की भिन्नता आदि का प्रतिनिधित्व करता है।

क्वीयर सिद्धांत समान अधिकारों की पुष्टि की वकालत करता है। क्वीयर सिद्धांत निश्चित और निर्धारित जेंडर तथा यौनिकता के खिलाफ कार्य करता है। यह जेंडर और यौनिकता के नाम पर व्यवहृत भेदभाव की समाप्ति का आग्रह करता है। मनुष्यत्वपूर्ण जीवन एवं उदारता की ओर मानवजाति को ले जाने हेतु प्रेरित करता है। एलजीबीटीक्यू संगठनों के प्रयास के फलस्वरूप क्वीयर चिंतन को मजबूती मिली। क्वीयर के लिए अंग्रेजी में LGBTQ, LGBTQ+, LGBTQ…….का प्रयोग भी किया जाता है। '+' और '....' इंगित चिन्हों से तात्पर्य वैविध्यता तथा अनिश्चितता से है। दरअसल यहाँ आशय प्रत्येक व्यक्ति का एक-दूसरे से अलग होने से है , वह चाहे जेंडर के स्तर पर हो या यौनिकता के स्तर पर।

क्वीयर सिद्धांत केवल यौनिकता से जुड़े प्रश्नों को ही नहीं बल्कि किसी भी तरह की अनिवार्यता तथा सामान्यीकरण को अनिवार्य मानने वाले तमाम पहलुओं पर प्रश्न उठाता है।

लेबिया (क्वीयर नारीवादी एल. बी. टी. संगठन) ने अपने अध्ययन के फलस्वरूप तैयार रिपोर्ट में बताया है कि हम क्वीयर शब्द का प्रयोग उन सभी लोगों के लिए कर रहे है जो स्वयं को भले ही 'क्वीयर' न मानते हों, परन्तु हेट्रोसेक्सुअल भी नहीं मानते। उन्होंने इस शब्द का प्रयोग उन समूहों, अभियानों, आन्दोलनों और व्यक्तियों के लिए भी किया है, जो स्वयं को 'क्वीयर' कहते हैं और संभवतः एल बी टी /एल जी बी टी अथवा ट्रांसजेंडर शब्द का प्रयोग करते हैं।

इनके जीवन से जुड़ी राजनीति तथा इनके विचारों को 'क्वियर राजनीति' कहा जाता है। ऐसे लोग पाश्चात्य राष्ट्रों और भारत सहित दुनिया-भर में एक जुट होकर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा रहे हैं। और प्रत्येक राष्ट्र में छोटे-बड़े संगठन सक्रीय हैं जो ऐसे लोगों के लिए कार्यरत हैं।

कोई भी काम या कोई भी व्यक्ति जब समाज के निर्धारित नियमों के अनुकूल व्यवहार नहीं करता तो उसे बीमार कहकर संबोधित किया जाता है या तो अपराध से जोड़ दिया जाता हैं। सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से स्त्री और पुरुष के लिए कुछ निर्दिष्ट भूमिकाएं गढ़ी जाती हैं। इसके अनुरूप व्यवहार न करने वाले लोगों को 'अन्यीकृत' या 'बहिष्कृत' कर दिया जाता है। ऐसे तमाम लोग जो इन भूमिकाओं के अनुकूल व्यवहार नहीं करते वे बिल्कुल सामान्य होते हैं।

यह एक आम सामाजिक धारणा है कि यौन आकर्षण पुरुष जेंडर व्यक्ति एवं स्त्री जेंडर व्यक्ति के बीच होता है। जिसे हम विषमलैंगिकता के नाम से जानते है। यह सच है परन्तु पूरा सच नहीं है। एक स्त्री निर्धारित व्यक्ति की पहचान जेंडर के आधार पर स्त्रीत्व या पुरुषत्व एवं यौन अभिविन्यास के आधार पर विषमलैंगिक, द्विलैंगिक (बाईसेक्सुअल), समलैंगिक के बीच कुछ भी हो सकता है। दूसरी तरफ स्वयं को 'गे' बताने वाला व्यक्ति जेंडर के आधार पर स्त्रीत्व या पुरुषत्व जैसा कुछ भी व्यवहार कर सकता है। स्त्री या पुरुष एवं विषमलैंगिक या समलैंगिक के अलावा यौन अभिविन्यास तथा जेंडर पहचान के कई प्रकार होते है और हो सकते हैं।

हर व्यक्ति की पहचान, भूमिका तथा उसकी अभिव्यक्ति का तरीका अपना और अलग होता है। वह समाज का हिस्सा है तो उसपर समाज का प्रभाव पड़ता ही है और वह समाज द्वारा निर्मित जेंडरनुमा व्यवहार करता है, तो इसमें ताज्जुब जैसा कुछ नहीं है कि कुछ लोगों का ओरिएंटेशन इससे भिन्न होता है और वह इस बने-बनाए खांके के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते। "दोनों यौनों के बीच कुछ भी 'वास्तविक' अंतर हो सकता है, उन्हें जानने की संभावना तब तक नहीं है जब तक दोनों यौनों के साथ अलग व्यवहार किया जाये। " [45] यह अनिवार्य नहीं है कि अगर कोई लड़के की तरह दिखता हो, तो वह लड़के जैसा अर्थात लड़के के लिए अपेक्षित मानकों के अनुरूप व्यवहार करें।

"सम्पूर्णा [46] में हर सदस्य का जेंडर उनका व्यक्तिगत मामला है। इसमें शामिल हैं: औरतें जो कहती हैं 'मैं ट्रांससेक्सुअल हूँ'। कोई कहते है, 'मैं औरत हूँ', कोई और कहते है, 'हमें यह बीच का मामला समझ नहीं आता, या तो आदमी होता है या औरत', कोई कहते है, 'मैं ट्रांसआदमी हूँ" [47] "वास्तव में अनेक जेंडर पहचानें होती हैं ...किसी जोड़े में भी, एक कह सकता है वह आदमी है, और दूसरा अपने आप को लेस्बियन कह सकता है" [48]

लेबिया [49] द्वारा किये गये अध्ययन में लेस्बिट[50] के एक सदस्य का कहना हैं - "शरीर आधारित जेंडर में हम विश्वास नहीं करते। ....हमारे स्तन और योनि के आधार पर हमें स्त्री निर्धारित करना, हमें मंजूर नहीं। समाज ने तय किया है कि जिस शरीर में योनि है और जिसे माहवारी होती है, वह स्त्री का है, और जिस शरीर में लिंग है, वह पुरुष का है।....पर हमें अपने मन, विचारों, भावनाओं को देखना है, जिनमें बदलाव होते रहते हैं। इनके कारण विभिन्न जेंडर होते हैं, नए जेंडर उभरते हैं। ....आपको जन्म पर स्त्री जेंडर निर्धारित किया जाता है, फिर बढ़ती उम्र में लड़कियों के कपड़े पहनाये जाते हैं, लड़कियों का व्यवहार रखना पड़ता है, बाल लंबे रखने पड़ते हैं। एक ढांचे में धकेला जाता है। इसके बाहर कुछ भी स्वीकृत नहीं

है। यह सब संस्कृति है।...और आपको आदमी से ही प्रेम करना है। इस प्रकार समाज ने दो जेंडर बनाए हैं। जेंडर वह है जो हम अपने अन्दर महसूस करें। हां, जेंडर हमारे अंदर की भावना है"[51]।

स्त्रैणनुमा/स्त्रियोचित व्यवहार करने वाला प्रत्येक पुरुष ट्रांसस्त्री नहीं होता है। जिस तरह पुरुषोचित व्यवहार करने वाली प्रत्येक लड़की स्वयं को लड़का या ट्रांसपुरुष नहीं मानती ठीक उसी प्रकार स्त्रियोचित व्यवहार वाला हर लड़का भी स्वयं को लड़की या ट्रांसस्त्री नहीं मानता है। स्त्रैणत्व उसके व्यक्तित्व का हिस्सा हो सकता है। वह स्त्रियोचित व्यवहार के बावजूद जन्म से प्राप्त यौनिक श्रेणी के साथ सहज व खुश हो सकता है।

जून 2020 में पश्चिम बंगाल के बीरभूम में रहने वाली एक महिला के गुणसूत्र जांच के बाद यह बात सामने आयी कि वह देखने में शरीर से महिला जैसी है परन्तु आनुवंशिक रूप से पुरुष हैं। महिला का जांच कर रहे डॉ.अनुपम का कहना हैं "हमने उनका जीन टेस्ट किया जिसमें क्रोमोसोम का विश्लेषण किया गया। इसमें पता चला कि उनमें 46 एक्सवाई क्रोमोसोम है जो कि पुरुषों में होता है। महिलाओं में 46 एक्सएक्स क्रोमोसोम और पुरुषों में 46 एक्सवाई क्रोमोसोम पाया जाता है। इससे हमें पता चला कि महिला एंडरोजन इंडेंसीटिविटी सिन्ड्रोम से ग्रस्त है। हालांकि वो एक सामान्य जीवन जी रही हैं और इस सिन्ड्रोम की वजह से उनके वैवाहिक जीवन पर भी कोई असर नहीं पड़ा है" [52]।

एलजीबीटीक्यूजन को लेकर कुछ मिथक समाज ने गढ़े है तो कुछ हमने इस विषय पर अपनी आधी -अधूरी ज्ञान की बदौलत गढ़ी है। किन्नर, ट्रांसजेन्डर, समलैंगिक या बाई-सेक्सुअल होना या कुछ और होना अर्थात बने बनाये खांके में फिट न होना अलग होना बन जाता है। दरअसल ये अलग होना कुछ और नहीं बल्कि विषमलैंगिक न होना ही है। इस समुदाय को लेकर समाज अधिकांशतः भ्रमित धारणाओं से घिरा हैं। यह समझ लेना कि जो स्त्री पुरुष को पसंद नहीं करती वो 'लेस्बियन' और जो पुरुष स्त्री को पसंद

नहीं करता वो 'गे' होता है , महज एक धारणा या एक मिथक है। ट्रांसजेन्डर, लेस्बियन, गे, बाई-सेक्सुअल या इंटरसेक्स व्यक्तियों का सम्बन्ध यौन अभिविन्यास(ओरिएंटेशन) से होता है।

श्री रामनाथलाल 'सुमन' आकर्षण के रहस्य के संबंध में वैज्ञानिक विवेचन करते हुए लिखते है कि " नित्य हम सैकड़ों-हजारों को देखते और मिलते हैं, कितने ही अपनी वाक्-चातुरी, उच्च-विचार-प्रदर्शन, रूप तथा अन्य गुणों से हमारा ध्यान अपनी ओर खींचते भी हैं, कभी-कभी दो-चार दिन तक उनकी याद भी हृदय में तहलका मचा रखती है, पर उन्हें हम प्रेम नहीं करते, यह अनुभव नहीं करते कि वे हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं- उनके बिना जीवन, जीवन नहीं है, उनसे हीन होकर प्राणहीन जीवन बिताना होगा। एकाएक किसी पर नजर पड़ती है और प्रथम दर्शन में ही जीवन में उथल-पुथल हो जाता है। पहली ही बार वह हमें चिर-परिचित- जैसे कहीं देखा हो- और अपना ही अंग मालूम होता है। ऐसा जान पड़ता है कि एक पदार्थ के ये दो खंड हो गये हैं। बिना मिले किसी के जीवन में पूर्णता की अनुभूति प्रवेश न करेगी। किस प्रकार की आँख, नाक, कान और मुंह वाला व्यक्ति होने से ऐसा होगा, यह नहीं कहा जा सकता। जान पड़ता है, इस प्रकार का आंतरिक आकर्षण निर्वाचन-बुद्धि (Sense of Choice) पर निर्भर नहीं है ; मनुष्य के भीतर की कोई अज्ञात प्रवृति (Instinct) उधर खींच ले जाती है। भौतिक-विज्ञानवादी इस क्रिया को विशेष प्रकार की बिजलियों से-जो प्रत्येक के शरीर में होती है- उत्पन्न होनेवाला आकर्षण बताते हैं" [53]।

समाज के बनाये कायदों के मुताबिक एक ही तरह की चाहत वाजिब है- मर्द और औरत के बीच। 'औरताना मर्द' या 'मर्दाना औरतें' (यहाँ 'औरताना' और 'मर्दाना' कहने से आशय सामाजिक जेंडर पहचान से है) या इससे भिन्न एलजीबीटीक्यू पहचानें मौजूद ढांचे के बाहर आते है इसलिए समाज को यह मंजूर नहीं। और इस तरह पुरुष-स्त्री विभाजन के साथ एलजीबीटीक्यूजन पहचान परिधि पर खिसक गये। ऐसी अस्मिताओं और पहचानों का गला घोंट दिया गया। "हमने दो विपरीत भिन्नता को चुनकर इनमें आकर्षण की यौनिकता का जो नियम बनाया वह बेहद ही स्थूल और रुटिनी है, वह 'अयाना'(सयाना के

विपरीत) और एकांगी भी है, अपरिपक्व भी है। जेनेटिक्स संज्ञान के अभाव में हमारा ध्यान इस तरफ गया ही नहीं कि ये जो एक में ही दो जेनोमिक भिन्नताएं हैं, इनमें से प्रत्येक के भीतर भी अनेक असंख्य भिन्नताएं ऐसी हैं जो परस्पर समानता के आकर्षण के नियम को भी बनाती हैं जो कि आज का जेनेटिकल सच है"[54]।

संदर्भ :

[1] . www.agentsofishq.com , (एजेंट ऑफ़ इश्क एक ऐसा साइट है जिसे देश भर के डॉक्टरों, टीचरों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, युवा समूहों और आम लोगों से बातचीत तथा रिसर्च के आधार पर तैयार किया गया है। एजेंट ऑफ़ इश्क पारोदेवी पिक्चर्स की पेशकश है। पारोदेवी पिक्चर्स मुंबई की एक स्वतंत्र मीडिया और आर्ट्स कंपनी है।)

[2] . सेनगुप्त, मल्लिका, साधना शाह (अनु.) (पहला संस्करण : 2007). स्त्रीलिंग निर्माण, गाजियाबाद : रेमाधव पब्लिकेशन्स, पृष्ठ. 233

[3] . www.agentsofishq.com

[4] . गीताश्री (प्रथम संस्करण : 2008). स्त्री आकांक्षा के मानचित्र, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, पृष्ठ.90

[5] . Fere's L'instinct Sexual, English edition, second Edition, Pg. 257

[6] . बारा, ऋतुपर्णा, जया शर्मा (संपा.) (संस्करण : सितंबर 2011). खुलती परतें, भाग 2, नई दिल्ली : निरंतर ट्रस्ट, पृष्ठ. 24

[7] . राय, (डॉ.) शशिकला, सुरेखा बनकर (अनु.) (प्रथम संस्करण : 2015). मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ. 23

[8] . के.पी, प्रमिला (प्रथम संस्करण : 2015). स्त्री अध्ययन की बुनियाद, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ.57

[9] . सेनगुप्त, मल्लिका, साधना शाह (अनु.) (प्रथम संस्करण : 2007). स्त्रीलिंग निर्माण, गाजियाबाद : रेमाधव पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ. 133

[10] . वॉलस्टनक्राफ्ट, मेरी, कात्यायनी सत्यम (अनु.) (संस्करण : 2003). स्त्री अधिकारों का औचित्य-साधन, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ. 95

[11] . वही, पृष्ठ.21

[12] . मिल, जॉन स्टुअर्ट, कात्यायनी सत्यम (संपा.) (संस्करण : 2002). स्त्रियों की पराधीनता, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ. 28

[13] . वही, पृष्ठ. 26

[14] . वुल्फ़, वर्जीनिया, माइकेल मोजेज़ (अनु.) (संस्करण : 2011). अपना एक कमरा, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ. 76

[15] . वही, पृष्ठ. 99

[16] . बोउवार, सीमोन द, प्रभा खेतान (अनु.) (नवीन संस्करण : 1990). स्त्री उपेक्षिता, नई दिल्ली : हिन्द पॉकेट बुक्स पृष्ठ. 27

[17] . वही, पृष्ठ.45

[18] . एंगेल्स, फ्रेडरिक (प्रथम संस्करण : 1884). परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति. (1884). पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस. पहला भारतीय संस्करण जुलाई 2010. पृष्ठ.202

[19] . बोउवार, सीमोन द, प्रभा खेतान (अनु.) (नवीन संस्करण : 1990). स्त्री उपेक्षिता, नई दिल्ली : हिन्द पॉकेट बुक्स, पृष्ठ.45

[20] . खेतान, (डॉ.) प्रभा (प्रथम संस्करण : 2004). बाज़ार के बीच: बाज़ार के खिलाफ, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ. 171.172

[21] . मिल, जॉन स्टुअर्ट, कात्यायनी सत्यम (संपा.) (संस्करण : 2002). स्त्रियों की पराधीनता, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ.44

[22] . एक क्वीयर नारीवादी एल बी टी संगठन है।

[23] . अग्रवाल, निधि, नलिनी भनोट (अनु.) (प्रथम संस्करण : 2014). लेबिया. बाइनरी जेंडर व्यवस्था को तोड़ते हुए, A Queer Feminist LBT Collective. पृष्ठ . 35,41,52,60.

[24] . राय, (डॉ.) शशिकला, सुरेखा बनकर (अनु.) (प्रथम संस्करण : 2015). मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ. 160

[25] . बारा, ऋतुपर्णा, जया शर्मा (संपा.) (संस्करण : सितंबर 2011). खुलती परतें, भाग 2, नई दिल्ली : निरंतर ट्रस्ट, पृष्ठ. 25

[26] . वही, पृष्ठ. 25

[27] . बोउवार, सीमोन द, प्रभा खेतान (अनु.) (नवीन संस्करण : 1990). स्त्री उपेक्षिता, नई दिल्ली : हिन्द पॉकेट बुक्स पृष्ठ. 180-181

[28] . वही, पृष्ठ. 181

[29] . वही, पृष्ठ. 181

[30] . वही, पृष्ठ. 181

[31] . वही. पृष्ठ. 183

[32]. वही. पृष्ठ. 183

[33] . उग्र', पाण्डेय बेचन शर्मा (तृतीय संस्करण : 1953). चाकलेट, कलकत्ता : टंडन ब्रदर्स प्रकाशन, पृष्ठ. 41

[34] . Devi, Shakuntala (Edition : 1977). The world of Homosexuals, vikas publishing house, pg. 11

[35] . चटर्जी, गीतांजलि (प्रथम संस्करण : 2010). तीसरे लोग, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, पृष्ठ. 7

[36] . सेनगुप्त, मल्लिका, साधना शाह (अनु.) (प्रथम संस्करण : 2007). स्त्रीलिंग निर्माण, गाजियाबाद : रेमाधव पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ-135.136

[37] . प्रदीप (डॉ.) प.पाटकर (प्रथम संस्करण : 2015). मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ. 17

[38] . चन्द्र, सुधीर (प्रथम संस्करण : 2020). भूपेन खख्खर: एक अन्तरंग संस्मरण, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ. 127

[39] . चंद्र, सुधीर (प्रथम संस्करण : 2010). गांधी के देश में, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ. 92. 93

[40] . सिंह, सरोज (संस्करण : अगस्त 2020). सांस्कृतिक आलोचना के विविध आयाम, वागर्थ, अगस्त, पृष्ठ. 120

[41] . https://www.bbc.com/hindi/india-53223013

[42] . वही, पृष्ठ. 98

[43] . Bakshi, Kaustav, Rohit k. Dasgupta (Edition : 2019). Queer Studies, Orient Blackswan, pg. 35

[44] . www.agentsofishq.com

[45] . Millett, Kate (Edition : 1970). Sexual politics, U.S : Doubleday and co, pg. 20

[46] . सम्पूर्णा की स्थापना 2000 में हुई। इसके संस्थापक ने विश्व भर में ट्रांस लोगों के लिए एक नेटवर्क के रूप में इसे स्थापित किया। सम्पूर्णा के संस्थापक एक ट्रांसआदमी हैं। यह एक विश्वव्यापी ऑनलाइन नेटवर्क है जिनकी बैठक मुंबई में होती है।

[47] . अग्रवाल, निधि, नलिनी भनोट (अनु.) (जून 2014). लेबिया, बाइनरी जेंडर व्यवस्था को तोड़ते हुए, A Queer Feminist LBT Collective, Impression Graphics, Mumbai, pg. 93

[48] . वही, pg. 93

[49] . क्वीयर नारीवादी एल बी टी संगठन

[50] . श्रमिक वर्ग के लेस्बियन और बाईसेक्सुअल सिसजेंडर औरतों तथा एफ टी एम ट्रांसजेंडर का सहायक समूह हैं।

[51] . अग्रवाल, निधि, नलिनी भनोट (अनु.) (जून 2014). लेबिया, बाइनरी जेंडर व्यवस्था को तोड़ते हुए, A Queer Feminist LBT Collective, Impression Graphics, Mumbai, pg. 94

[52] . https://www.bbc.com/hindi/india-53223013

[53] . 'सुमन', श्री रामनाथलाल. (तृतीय संस्करण : 1953). आकर्षण का रहस्य, चाकलेट, कलकत्ता : टंडन ब्रदर्स प्रकाशन, पृष्ठ. 31.32

[54] . सांयाल, गौतम, गौरीनाथ (संपा.) (संस्करण : 2019). एलजीबीटीक्यू-इत्यादि : भाषा का संकट, बया, पृष्ठ. 9